Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान बदर Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष 5

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक- 48

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

10 रबीयुल सानी 1441 हिज्री कमरी 26 नबुव्वत 1399 हिज्री शम्सी 26 नवम्बर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

हमारी जमाअत के लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी है कि वे अपने अंदर पवित्र तबदीली करें । ख़ुदा के पास इन्सान की सच्ची जीवनी है। उसे क्या मालूम है इस में क्या लिखा है। इस लिए दिल को जगा जगा कर ग़ौर करना चाहिए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अपने अंदर पवित्र तबदीली पैदा करें

हमारी जमाअत के लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी है कि वे अपने अंदर पवित्र तबदीली करें,क्योंकि उनको तो ताज़ा मार्फ़त मिलती है और यदि मार्फ़त का दावा कर के कोई इस पर न चले तो यह केवल मुंह की बातें ही हैं। अत: हमारी जमाअत को दूसरों की सुस्ती सुस्त न कर दे और इस को सुस्ती का साहस न दिलाए । वह उनकी ठण्डी मुहब्बत देखकर ख़ुद भी कठोर हृदय न कर ले।

इन्सान बहुत इच्छाएं तथा आशाएं रखता है परन्तु ग़ैब की तक़दीर की किस को ख़बर है। ज़िन्दगी आशाओं के अनुसार नहीं चलती। तमन्नाओं का सिल्सिला दूसरा है। कज़ा तथा क़दर का सिल्सिला दूसरा है। और वही सच्चा सिल्सिला है। ख़ुदा के पास इन्सान की सच्ची जीवनी है। उसे क्या मालूम है इस में क्या लिखा है। इस लिए दिल को जगा जगा कर ग़ौर करना चाहिए।

तौहीद का एक पहलू

तौहीद की एक किस्म यह भी है कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत में अपने नफ़्स के लक्षयों को भी बीच से उठा दे और अपने वजूद को उस की महानता में लीन करे।

1 मई 1898 ई

इस्लाम के विरुद्ध किताबों को ज़ब्त करना

जनाब मौलाना मौलवी अब्दुल करीम साहिब स्यालकोटी के वे मेमोरियल पढ़ चुकने के बाद जो हज़रत मसीह मौऊद ने अन्जुमन हिमायत इस्लाम के मेमोरियल उम्महातुल मोमेनीन के बारे में सुधार के उद्देश्य से लिखा था। हज़रत अक़दस अलैहिस्सालम ने ऊंची आवाज़ में फ़रमाया

"चूँकि यह मेमोरियल इस्लाम और इस्लाम वालों के समर्थन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची इज़्ज़त और क़ुरआन करीम की महानता स्थापित करने और इस्लाम की पवित्र और स्वच्छ शक्ल को दिखाने के लिए लिखा गया है इस लिए उसके आपके सामने पढ़े जाने से सिर्फ यह उद्देश्य है कि ताकि आप लोगों से मश्वरा के तौर पर पूछा जाए कि क्या वक़्त की मस्लहत यह है कि किताब का उत्तर लिखा जाए या मेमोरियल भेज कर गर्वनमेंट से मांग की जाए कि वह ऐसे लेखकों को डांटे और प्रकाशन बन्द

शेष पृष्ठ 12 पर

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

जुम्अ: के दिन नहाने, तेल और ख़ुशबू लगाने और ख़ामोशी और ध्यान से ख़ुत्बा सुनने का महत्व

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :जो व्यक्ति जुम्अ: के दिन नहाता है और जहां तक उस के लिए पवित्र तथा साफ़ होना संभव है पवित्र तथा साफ़ होता है और अपने तेल में से तेल लगाता है या अपने घर की ख़ुशबू में से ख़ुशबू लगाता है। फिर निकलता है और दो आदमियों के बीच घुस कर उनको अलग नहीं करता। फिर नमाज़ पढ़ता है जितनी उस के लिए ताकत हो। इस के बाद जब इमाम लोगों से सम्बोधित होता है तो वह ख़ामोशी से सुनता है तो उस के जो भी गुनाह इस जुम्अ: से लेकर अगले जुम्अ: तक होंगे उनसे उस की क्षमा कर दी जाएगी।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : यदि मुझे इसका ख़्याल न होता कि मैं अपनी उम्मत को कष्ट में डाल दूंगा या यह फ़रमाया कि यदि लोगों के कष्ट का मुझे ख़्याल न होता तो मैं उन्हें ज़रूर हर नमाज़ के साथ मिस्वाक का आदेश देता।

(सही बुख़ारी,भाग 2 किताबुल जमा, प्रकाशन कादियान 2006 ई)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की औलाद के लिए सदक़ा जायज़ नहीं। इस महान उपकारी की औलाद से जो व्यवहार किया जाए वह सदक़ा हो ही नहीं सकता, वह तो उस उपकारी का बदला उतारने की एक छोटी सी कोशिश होगी।
काश मुसलमान इस बिन्दु को समझें और सादात को सदक़ा देने या उन की कठिनाइयों को बिल्कुल उपेक्षित करने के दो धिक्कृत जुर्मों से बच जांए।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ की व्याख्या करते हुए फरमाते हैं कि

"नौवीं क़िस्म ख़र्च की क़ुरआन क़रीम से एहसान को अदा करने की साबित होती है जैसे उदाहरणत: माता पिता की सेवा का आदेश है। यह सुलूक न तो सेवा का बदला कहला सकता है क्योंकि उपकार माता पिता नहीं करते बल्कि एक कुदरती जोश से बच्चे की परवरिश करते हैं और बच्चा उनको इस काम पर निर्धारित नहीं करता न कोई और इन्सान उन्हें निर्धारित करता है और न उन्हें किसी बदला की तमन्ना होती है। अत: माता पिता का सुलूक बच्चे से सेवा नहीं है बल्कि उपकार है और अगर बड़ा हो कर कोई बच्चा अपने माता पिता की सेवा करता है तो वह उनका सेवा का हक अदा नहीं करता बल्कि उन के एहसान का बदला उतारने की कोशिश करता है।

इसी उपकार को अदा करने के आदेश के नीचे अपने उस्तादों और दूसरे उपकारकों या उनकी औलादों से हुस्ने सुलूक भी आ जाता है। और इस हुक्म के अधीन सबसे बड़े इन्सानी मुहसिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुस्ने सुलूक का बदला भी आ जाता है। जो सहाबा किराम दुरूद और दुआओं और सेवा के माध्यम से अदा करने की कोशिश करते थे। मेरे निकट रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जो अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि उनकी औलाद के लिए सदक़ा जायज़ नहीं तो इस में यही हिक्मत थी कि उम्मते इस्लामिया को बताया जाए कि इस महान उपकारक की औलाद से जो सुलूक किया जाए वह सदक़ा हो ही नहीं सकता। वह तो उस

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-23)

देश के क़ानून की पाबन्दी करना, देश में अमन स्थापित रखना हमारे ईमान का हिस्सा है क्योंकि इसी से देश की तरक़्क़ी होती है।

यदि मुसलमानों की तरफ़ से कुछ भी कट्टरता हो रही है तो वे उनके व्यक्तिगत कर्म हैं।

न इस्लाम की तारीख़ हमें यह बताती है कि यह उचित है और न इस्लाम की शिक्षा हमें यह बताती है कि यह उचित है।

औरत वह हस्ती है जो नेक तरबियत करके अपनी औलाद को जन्नत में ले जाने वाली होती है और माहौल को जन्नत बनाने वाली होती है , इस समाज को जन्नत बनाने वाली होती है, इस शहर को देश को जहां वो रहती है जन्नत बनाने वाली होती है।

दुनिया में मतभेदों को दूर करने के लिए एक चीज़ यह है कि हम देखें कि हमारे अंदर साझी चीज़ें क्या हैं, यह न देखें कि हमारे अंदर अन्तर क्या है।

वे common चीज़ ख़ुदा है और जब हम इस बात को समझ लें और एक ख़ुदा की इबादत करने वाले हों और उसका हक़ अदा करने वाले हों और यह समझने वाले हों कि सब सृष्टि ख़ुदा ने पैदा की है और उसकी सृष्टि है तो फिर धार्मिक मतभेद या कल्चर के मतभेदों या दूसरे छोटे मतभेदों, हर किस्म के मतभेद ख़त्म हो जाते हैं।

क़ुरआन करीम ने कहा है कि धर्म दिल का मामला है और इसमें कोई ज़बरदस्ती नहीं जब ज़बरदस्ती नहीं और दिल का मामला है तो फिर प्रत्येक को हक़ है कि जो चाहे धर्म धारण करे , यह ख़ूबी अभी तक जर्मनी में भी और दूसरे पश्चिमी देशों में भी है। यहां धार्मिक आज़ादी है, और जब तक यह धार्मिक आज़ादी स्थापित रहेगी, यहां अमन भी स्थापित रहेगा और देश तरक़्क़ी भी करता जाएगा।

मस्जिद बैयतुल बसीर (Nahe) जर्मनी के उद्घाटन आयोजन में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

इसके बाद Tobias von der Heide साहिब जो प्रन्तीय असेंबली के मेंबर हैं ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ और अन्य हाज़िरीन को सलाम प्रस्तुत किया। फिर उन्होंने कहा कि मैं Kiel से इस प्रोग्राम के लिए हाज़िर हुआ हूँ। मुझे इस बात की बहुत ही ख़ुशी हो रही है कि केवल अहमदिया मुस्लिम जमाअत के मेंबर ही इस आयोजन में शामिल नहीं हो रहे बल्कि बहुत से स्थानीय असेंबली के सियास्तदान और पड़ोसी इत्यादि भी इसमें शामिल हैं।

महोदय ने कहा कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत प्रान्त Schleswig Holstein में एक प्रमुख पार्टनर (partner) है। इसका एक कारण तो यह है कि उनके अमन स्थापित करने के अक़ीदा हमारे दृष्टिकोण से बहुत ही मिलते-जुलते हैं। इसमें सबसे अहम पहलू रहमानियत का गुण है। फिर वह इन्साफ़ जो आपकी शिक्षा का हिस्सा है , मर्द और औरत के अधिकार में बराबरी, धर्म और हुकूमत का अलग अलग होना, और हर प्रकार के अत्याचार से बचना, यह सब ऐसे आचरण हैं जो हम सब में पाए जाने चाहिऐं। एक बात जो इस के अन्तर्गत प्रमुख है वह यह है कि आप लोग यह बातें छुपा कर नहीं रखते बल्कि सब इन्सानों से प्यार और मुहब्बत से व्यवहार करते हों। यह बात हम आज भी इस आयोजन में देख रहे हैं कि हम सबके साथ एक दोस्त मौजूद है जो हमारे सवाल हल करता है और हमारी मेहमान नवाज़ी करता है। आप लोग हमेशा अपने प्रोग्रामों में हमें दावत देते हैं और posters के द्वारा अपना पैग़ाम दूसरों तक पहुंचा रहे हैं। आप लोग हमारे समाज का हिस्सा हैं। फिर आप लोगों को Krperschaft des ffentlichen Rechts का दर्जा मिला हुआ है (अर्थात सरकारी तौर पर आप को चर्च के बराबर दर्जा मिला हुआ है।) और यह कोई मामूली चीज़ नहीं है। बहुत सी जमाअतें और संस्थाएं आज तक इस की कोशिश में लगी हुई हैं। परन्तु इस बात से केवल यह स्पष्ट होता है कि आप लोग हमारे क़ानून के अनुसार रहते हैं। आप लोग मेरे निकट यह स्पष्ट करते हैं और एक नमूना हैं कि इस्लाम जर्मनी का किस तरह से हिस्सा बन सकता है और बल्कि सिर्फ़ बन ही नहीं सकता बल्कि आज कल इस्लाम जर्मनी का हिस्सा बन चुका है।

आख़िर पर उन्होंने कहा कि मैं एक बात का यहां वर्णन करना चाहता हूँ जो मेरे निकट महत्त्वपूर्ण है। वह एक दहशतगर्द का हमला था जो Christ church में हुआ। आज के दिन भी हमने अवश्य सिक्योरिटी के कुछ प्रबन्ध देखे होंगे। फिर Halle में जो घटनाएं हुईं उन्होंने हमें यह भी दिखाया कि जर्मनी में भी लोगों पर केवल उनके धर्म के कारण से ज़ुल्म किया जा सकता है।

महोदय ने कहा हम सब को मिलकर ऐसी दुश्मनियों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठानी होगी। और देश में जो धार्मिक आज़ादी है इसकी रक्षा करनी चाहिए। एक निर्धारित पक्ष इसमें interreligious dialogue है। आख़िर पर मेरी यह इच्छा है कि यह मस्जिद एक अमन का स्थान बने जिसमें सब इकट्ठे हो सकें। इस दृष्टि से यह बात हमें हमेशा याद रखनी चाहिए कि मुहब्बत सबसे और नफ़रत किसी से नहीं।

इस सम्बोधन के बाद Gero Storjohann साहिब जो नैशनल असेंबली के मेंबर हैं उन्हों ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। उन्हों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ और अन्य हाज़िरीन को मुबारकबाद दी। उन्होंने कहा

30 साल जो इस मस्जिद के बनने में गुज़रे हैं वह अवश्य आसान समय न था। परन्तु जमाअत ने इस बारे में बहुत अच्छा काम किया और लोगों पर स्पष्ट हो गया कि आपकी जमाअत शान्ति प्रिय है।

महोदय ने कहा कि मस्जिद के उद्घाटन की मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है। जब मुसलमान जर्मनी में मस्जिदें बनाते हैं तो यह एक नियम के अनुसार काम होना चाहिए। मस्जिद का बनाना यह स्पष्ट करता है कि यदि कोई एक घर बना रहा है तो वह अवश्य इधर रहना भी चाहता है। ऐसे लोगों को जर्मनी में अपना एक घर मिल गया है। इसलिए एक मस्जिद बनाना इस बात की निशानी हरगिज़ नहीं है कि कोई अपने आपको सबसे अलग करना चाहता है बल्कि इस से integration स्पष्ट होती है। मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि Nahe में कोई बड़ी समस्या नहीं पैदा की गई। आपकी जमाअत ने पहले दिन से transparency से काम लिया। उस की प्लैनिंग और इस के मानवता के काम में बहुत अधिक देर हो गई। परन्तु यह दूसरे कामों में भी हो जाता है चाहे एक airport बनाया जाए, कोई नई सड़क बनाई जाए या साईकल का रास्ता ही बनाना हो। एक कारण इतनी देर लगने का यह भी था कि आप लोग केवल अपनी जमाअत के मेंबरों से दान वसूल करते थे

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

हे मआज़ ! मैं तुम्हें ताकीद करता हूँ कि हर नमाज़ के बाद यह ज़िक्र करना और यह हरगिज़ न छोड़ना कि तुम कहो कि

اَللّٰھُمَّ أَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ (अल-हदीस)

उत्तम ईमान यह है कि तुम अल्लाह के लिए मुहब्बत करो और अल्लाह ही के लिए तुम नफ़रत करो और तुम अपनी ज़बान को अल्लाह के ज़िक्र में लगाए रखो। और तुम लोगों के लिए वही पसन्द करो जो तुम अपने लिए पसन्द करते हो और उनके लिए इस चीज़ को नापसन्द करो जो तुम अपने लिए नापसन्द करते हो।

क़ुरआन के क़ारी, रसूल के महबूब,फ़िक़्ही मामलों में राय वाले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबी हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि अल्लाहो अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

तीन मरहूमीन आदरणीय मौलवी फ़र्ज़ान ख़ान साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज ज़िला ख़ुर्दा विनयागढ़ उडीशा इंडिया, आदरणीय अब्दुल्लाह मिल साहिब लोकल मिशनरी मलेशीया और आदरणीय अब्दुल वाहिद साहिब मुअल्लिम सिल्सिला क़ादियान का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 अक्तूबर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन सहाबी का मैं ज़िक्र करूँगा उनका नाम है हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि। आप का नाम मुआज़ था। आप के पिता का नाम जबल बिन अमरो और माता का नाम हिन्द पुत्री सहल था जो जुहैना कबीला की शाख़ बनू रबअ से थीं। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि की कुनिय्यत अब्दुर्रहमान थी। आप का सम्बन्ध ख़ज़रज क़बीला की शाख़ उदय्या बिन सअद बिन अली से था। सैरुस्सहाब: के लेखक लिखते हैं कि सअद बिन अली के दो बेटे थे सलमा और उदय्या। सलमा की नस्ल से बनू सलमा हैं। इस्लाम के ज़माने में उदय्या बिन सअद के ख़ानदान में से सिर्फ़ दो व्यक्ति बाक़ी थे। एक हज़रत मुआज़ रज़ि और दूसरे उनके साहिबज़ादे अब्दुर्रहमान। बनू उदय्या के मकान बनू सलमा के पड़ोस में स्थित थे। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि बहुत सफ़ेद, ख़ूबसूरत चेहरे वाले, चमकदार दाँतों वाले, सुरमगीं आँखों वाले थे। आप अपनी क़ौम के नौजवानों में से ज़्यादा ख़ूबसूरत नौजवान और ज़्यादा दानी थे। अबू नईम वर्णन करते हैं कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि अन्सार के नौजवानों में से सहनशीलता, लज्जा और दान में बेहतर थे। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि बैअत उक़बा सानिया में सत्तर अन्सार के साथ सम्मिलित हुए और इस्लाम स्वीकार करते वक़्त आप की उम्र अठारह साल थी। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि जंग बदर ,जंग उहुद, जंग ख़ंदक़ और बाद की समस्त जंगों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल हुए। आप जंग बदर में उस वक़्त शामिल हुए जब आप की उम्र बीस या इक्कीस साल थी। उनके अख़्याफी भाई अर्थात ऐसे भाई जिनकी माँ एक हो और बाप अलग-अलग हों, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जद्द भी जंग बदर में शरीक थे। उसदुल ग़ाबह के अनुसार आप के अख़्याफ़ी भाई का नाम सहल बिन मुहम्मद बिन जद्द है और सहल बनू सलमा से थे। इसी कारण से बनू सलमा उनको भी अपने क़बीला में से गिनते थे। जब मक्का के मुहाजरीन हिजरत कर के मदीना आए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि को हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि का भाई बनाया।

इतिहास की विभिन्न पुस्तकों में बस यही उद्धरण वर्णित है। इस्लाम स्वीकार करने के बाद हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि ने बनू सलमा के नौजवानों के साथ मिलकर बनू सलमा के बुत तोड़े थे।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 187 मआज़ बिन जबल दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई) (अत्तबक़ातुल कुब्रा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 437-438 मुआज़ बिन जबल व मन सावर बनी सलम दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई) (अलअसाबह फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 6 पृष्ठ 107-108 मआज़ बिन जबल, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995 ई)(सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 497 मआज़ बिन जबल, दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

पहले एक सहाबी के वर्णन में यह घटना बयान हो चुका है कि वह किस तरह अपने ख़ानदान के ,घर वालों के बुत तोड़ते थे और यहां भी वर्णन कर देता हूँ। हज़रत अमरो बिन जमूह रज़ि ने अपने घर में ही लकड़ी का एक बुत बना कर उसे मनात का नाम दे रखा था और उस का बड़ा सम्मान करते थे। बैअत उक़बा सानिया के अवसर पर बनू सलमा के कुछ नौजवानों ने बैअत की। उनमें हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि भी थे। ख़ुद अमरो के बेटे मुआज़ ने भी बैअत कर ली थी और यह घटना जो मैं कह रहा हूँ यह पहले मुआज़ बिन अमरो के अन्तर्गत वर्णन हो चुका है। तो कहते हैं उन्होंने अपने पिता अमरो को इस्लाम की तरफ़ बुलाने के लिए उपाय किया कि हज़रत अमरो का वह बुत जिसे उन्होंने अपने घर में सजा रखा था, रात को उसे उठा के कूड़े का जो गढ़ा था, ढेर था वहां फेंक आते थे और जिन लड़कों की मदद लिया करते थे उनमें हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि भी शामिल थे। बहरहाल एक दिन इस कूड़े में उन्होंने उठा के फेंक दिया। अमरो उसे तलाश करके अपने घर ले आए और कहा कि अगर मुझे उस व्यक्ति का पता चल जाए जो मेरे बुत के साथ यह व्यवहार करता है तो मैं उसे इबरत वाली सज़ा दूँगा। अगले दिन फिर इन नौजवानों ने इस बुत के साथ वही व्यवहार किया। वह फिर गढ़े में उल्टा पड़ा था। वह फिर उसे उठा के ले आए। तीसरे दिन फिर उस बुत को साफ़ सुथरा कर के सजा के रखा और साथ अपनी तलवार टांग दी और बुत को सम्बोधित करके कहा कि ख़ुदा क़सम ! मुझे नहीं पता कि कौन तुम्हारे साथ ये हरकतें करता है लेकिन अब मैं तलवार भी तुम्हारे साथ छोड़ के जा रहा हूँ अपनी सुरक्षा अब ख़ुद कर लेना, तलवार अब तुम्हारे पास है। अगले दिन फिर हज़रत अमरो ने देखा कि बुत अपनी जगह मौजूद नहीं है और फिर मुहल्ले के उसी गढ़े के अंदर एक मुर्दा कुत्ते के गले में वह बंधा हुआ पड़ा मिल गया। यह देख के वह बहुत सटपटाए और सख़्त परेशान हो कर सोचने पर मजबूर हो गए कि वह बुत जिसे मैं ने ख़ुदा बना कर रखा हुआ है इस में तो इतनी शक्ति और ताक़त भी नहीं है कि तलवार पास होते हुए अपने आपको बचा सके, उसने मेरी क्या सुरक्षा करनी है और फिर इस पर और अधिक यह कि एक मुर्दा कुत्ता उस के गले में पड़ा हुआ है। फिर यह ख़ुदा कैसे हो सकता है। बहरहाल यह बात फिर उनको इस्लाम की तरफ़ माइल करने वाली बनी और इस्लाम स्वीकार करने का कारण बन गई।

(उद्धरित उसदुल ग़ाबह भाग 4 पृष्ठ 195 अमरो बिन अल-जमूह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत तथा इख़लास का इस बात से भी अंदाज़ा होता है कि जंग उहद के बाद जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना वापस तशरीफ़ लाए तो रोने धोने की आवाज़ गलियों से आ रही थी। आप ने फ़रमाया यह क्या है? उन्होंने कहा कि अन्सार की औरतें हैं जो अपने शहीदों पर रो रही हैं। आप ने फ़रमाया हमज़ा रज़ि के लिए कोई रोने वाला नहीं है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हमज़ा रज़ि के लिए क्षमा की दुआ की। जब हज़रत सईद बिन मुआज़ रज़ि और हज़रत सईद बिन उबादह रज़ि और हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि ने यह सुना तो वे अपने-अपने मुहल्लों में गए और मदीना की रोने वालियों और नोहा करने वालियों को इकट्ठा कर के लाए। उन्होंने कहा कि अब कोई अन्सार के शहीदों पर नहीं रोएगा जब तक नबी सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम के चाचा पर न रो लू क्योंकि आप ने फ़रमाया कि मदीना में हमज़ा रज़ि के लिए रोने वाला कोई नहीं। यह इश्क़ था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से। आप के कारण से कि आप को हज़रत हमज़ा रज़ि का कष्ट पहुंचा। (उद्धरित अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्ने कसीर भाग 3 पृष्ठ 95-96 जंग उहद दारुल मआरिफ़ बेरूत 1986 ई) यद्यपि कि रोना और नोहा करना मना है लेकिन यहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ समय के लिए इजाज़त दी या लोगों की भावनाओं को देख के ख़ुद इज़्हार किया कि काश कि हमज़ा रज़ि के लिए भी जज़बात का इज़हार होता लेकिन बहरहाल यह नोहा करना प्राय तौर पर इस्लाम में मना है। ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मना फरमाया है।

मक्का विजय के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हुनैन की तरफ़ तशरीफ़ ले गए। हुनैन जो है वह मक्का के उत्तर पूर्व में ताइफ के निकट एक वादी है तो आप ने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि को मक्का में पीछे छोड़ा ताकि वह मक्का वालों को धर्म सिखाएँ और उन्हें पढ़ाऐं।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 2 पृष्ठ 265 "मआज़ बिन जबल" दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 109 ज़व्वार एकेडेमी पब्लीकेशनज़)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि ने जंगे तबूक में भरपूर तरीक़े से हिस्सा लिया। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि के बारे में पूछा जो उस वक़्त मदीना में ही रह गए थे तो बनू सलमा के एक व्यक्ति ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने हज़रत कअब बिन मालिक की बुराई की तो हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि ने उस व्यक्ति को डाँटा और कहा या रसूलुल्लाह! हम ने तो उनमें भलाई ही देखी है। कोई बुराई नहीं देखी।

(उद्धरित सही बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब हदीस कअब बिन मालिक ....अन्त तक हदीस 4418)

यह थे उच्च आचरण कि पीछे भी किसी की बुराई नहीं करनी।

क़तादा वर्णन करते हैं कि मैं ने हज़रत अनस रज़ि को कहते हुए सुना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में चार आदमियों ने क़ुरआन जमा किया वे सब अन्सार में से हैं। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि, हज़रत उबई बिन काअब रज़ि, हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि और हज़रत अबू ज़ैद रज़ि। हज़रत अबू ज़ैद रज़ि हज़रत अनस रज़ि के चाचा थे।

(सही मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल अल-असहाबा बाब मिन फ़ज़ाइल उबय्य बिन कअब...हदीस 2465)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाह तआला अन्हुमा से रिवायत है कि मैं ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि चार व्यक्तियों से क़ुरआन सीखो इब्न मसऊद रज़ि और अबू हुज़ैफ़ा के ग़ुलाम सालिम रज़ि और उबई बिन कअब रज़ि और मुआज़ बिन जबल से।

(सही बुख़ारी किताब मनाक़िब अल-अन्सार बाब मनाक़िब मुआज़ बिन जबल हदीस 3806)

यह बुख़ारी की रिवायत है जो मैं ने पहले पढ़ी है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रिज़ वर्णन फ़रमाते हैं। हज़रत कअब रज़ि के वर्णन में पहले भी कुछ वज़ाहत हुई थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन पढ़ाने वाले उस्तादों की एक जमाअत निर्धारित फ़रमाई थी जो सारा क़ुरआन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हिफ़्ज़ करके आगे लोगों को पढ़ाते थे। ये चार चोटी के उस्ताद थे जिनका काम यह था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क़ुरआन पढ़ें और लोगों को क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाऐं। फिर उनके अधीन और बहुत से सहाबा ऐसे थे जो लोगों को क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाते थे। इन चार बड़े उस्तादों के नाम ये हैं। अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि, सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा रज़ि, मुआज़ बिन जबल रज़ि, उबई बिन क़अब रज़ि। उनमें से पहले दो मुहाजिर हैं और दूसरे दो अन्सारी। कामों की दृष्टि से अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि एक मज़दूर थे, सालिम रज़ि एक आज़ाद किए ग़ुलाम थे, मुआज़ बिन जबल रज़ि और अबी बिन क़अब रज़ि मदीना के रईसों में से थे। मानो हर गिरोह में से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तमाम गिरोहों को समक्ष रखते हुए क़ारी निर्धारित कर दिए थे। हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि

خُذُوا الْقُرْاٰنَ مِنْ اَرْبَعَةٍ (مِنْ) عَبْدِاللّٰهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ وَ سَالِمٍ وَ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ وَاُبَيِّ بْنِ كَعْبٍ۔ जिन लोगों ने क़ुरआन पढ़ना हो वे इन चार से क़ुरआन पढ़ें। अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि, सालिम रज़ि, मुआज़ बिन जबल रज़ि और उबई बिन क़आब से।

ये चार तो वे थे जिन्हों ने सारा क़ुरआन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सीखा या आप को सुना कर उस की दुरुस्ती करवा ली लेकिन इस के इलावा भी बहुत से सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सीधा भी कुछ न कुछ क़ुरआन सीखते रहते थे। अत: एक रिवायत में आता है कि एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने एक शब्द को और तरह पढ़ा तो हज़रत उमर रज़ि ने उनको रोका और कहा कि इस तरह नहीं, इस तरह पढ़ना चाहिए। इस पर अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने कहा नहीं मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसी तरह सिखाया है। हज़रत उमर रज़ि उनको पकड़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि यह क़ुरआन ग़लत पढ़ते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि पढ़ के सुनाओ। जब उन्होंने पढ़ कर सुनाया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह तो ठीक है। हज़रत उमर रज़ि ने कहा हे अल्लाह के रसूल !मुझे तो आप ने ये शब्द दूसरे तरीक़ा में सिखाया है आप ने फ़रमाया वह भी ठीक है। इस से मालूम होता है कि सिर्फ यही चार सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क़ुरआन नहीं पढ़ते थे बल्कि दूसरे लोग भी पढ़ते थे अत: हज़रत उमर रज़ि का यह सवाल कि मुझे आप ने इस तरह पढ़ाया है बताता है कि हज़रत उमर रज़ि भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सीखते थे।

(उद्धरित दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 427-428)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत में से मेरी उम्मत पर सबसे ज़्यादा रहम करने वाले अबू बकर रज़ि हैं। और अल्लाह के धर्म में इन सबसे ज़्यादा मज़बूत उमर रज़ि हैं और उनमें सबसे ज़्यादा लज्जा वाले उसमान रज़ि हैं और उनमें सबसे ज़्यादा उत्तम फ़ैसला करने वाले अली बिन अबी तालिब रज़ि हैं और उनमें सबसे ज़्यादा अल्लाह की किताब क़ुरआन को जानने वाले उबई बिन क़अब रज़ि हैं और उनमें सबसे ज़्यादा हलाल हराम को जानने वाले मुआज़ बिन जबल रज़ि हैं और उनमें से सबसे ज़्यादा फ़राइज़ को जानने वाले ज़ैद बिन साबित रज़ि हैं। आप ने फ़रमाया। सुनो! हर उम्मत के लिए एक अमीन होता है और इस उम्मत के अमीन अब्बू उबैदा बिन जर्राह रज़ि हैं।

(सुनन इब्न माजा किताब इफ़्तिताहुल किताब फिल-ईमान वल-फ़ज़ाइल अस्सहाब वल-इलम बाब फ़ज़ाइल खब्बाब हदीस 154)

यह रिवायत पहले भी कम से कम इसी तरह वर्णन हो चुकी है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या ही अच्छे आदमी हैं अबू बकर रज़ि। क्या ही अच्छे आदमी हैं उमर रज़ि। क्या ही अच्छे आदमी हैं अबू उबैदा बिन अलजराह रज़ि। क्या ही अच्छे आदमी हैं उसैद बिन हुज़ैर रज़ि। और क्या ही अच्छे आदमी हैं साबित बिन क़ैस बिन शम्मास रज़ि। और क्या ही अच्छे आदमी हैं मुआज़ बिन जबल रज़ि। और क्या ही अच्छे आदमी हैं मुआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि। मस्नद अहमद बिन हंबल की यह है।

(मस्नद अहमद बिन हंबल मस्नद अबू हुरैरह भाग 3 पृष्ठ 502 हदीस 9421 आलम अलकुतुब बेरूत लबनान 1998 ई)

फिर हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दिन उनका हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि हे मुआज़ मैं यक़ीनन तुम से मुहब्बत करता हूँ। हज़रत मुआज़ रज़ि ने आप से निवेदन किया है रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों मैं भी आप से मुहब्बत करता हूँ। आप ने फ़रमाया मुआज़! मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि हर नमाज़ के बाद यह ज़िक्र करना और यह हरगिज़ न छोड़ना कि तुम कहो कि اَللّٰهُمَّ أَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ कि हे मेरे अल्लाह मेरी मदद फ़र्मा अपने ज़िक्र के लिए और अपने शुक्र के लिए और अपनी इबादत की ख़ूबसूरती के लिए।

(मस्नद अहमद बिन हंबल मस्नद मुआज़ बिन जबल भाग 7 पृष्ठ 380 हदीस 22470 आलेमुल कुतुब बेरूत लबनान 1998 ई)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े के बारे में न बताऊं तो हज़रत मुआज़ रज़ि ने निवेदन किया :क्यों नहीं, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया कि لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰه पढ़ लिया करो।

(मसनद अहमद बिन हंबल मस्नद मुआज़ बिन जबल भाग 7 पृष्ठ 374 हदीस 22450 आलेमुल कुतुब बेरूत लबनान 1998 ई)

हज़रत मुआज़ रज़ि से रिवायत है कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम से अफ़ज़ल ईमान के बारे में पूछा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। अफ़ज़ल ईमान यह है कि तुम अल्लाह के लिए मुहब्बत करो और अल्लाह ही के लिए तुम नफ़रत करो और तुम अपनी ज़बान को अल्लाह के ज़िक्र में लगाए रखो। हज़रत मुआज़ रज़ि ने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह और क्या है? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया और तुम लोगों के लिए वही पसन्द करो जो तुम अपने लिए पसन्द करते हो। और उनके लिए उस चीज़ को नापसन्द करो जो तुम अपने लिए नापसन्द करते हो।

(मसनद अहमद बिन हंबल मस्नद मुआज़ बिन जबल भाग 7 पृष्ठ 385 हदीस 22481 आलेमुल कुतुब बेरूत लबनान 1998 ई)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि से रिवायत है कि हज़रत मुआज़ रज़ि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ते और फिर वे अपने लोगों के पास आते और उन्हें नमाज़ पढ़ाते।

(सही बुख़ारी किताबुल अज़ान बाब इज़ा सल्ला सुम्मा उम क़ौमा हदीस 711)

पहले मस्जिद नब्वी में आकर नमाज़ पढ़ते। फिर अपने मुहल्ले में चले जाते। वहां जा के अपने लोगों को नमाज़ पढ़ाते। यह बुख़ारी की रिवायत है। हज़रत जाबिर रज़ि से रिवायत है वह बयान करते हैं कि हज़रत मुआज़ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ नमाज़ पढ़ा करते थे। फिर आकर अपने लोगों की इमामत करते थे। एक रात उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इशा की नमाज़ अदा की फिर अपने लोगों के पास आकर उनकी इमामत की तो इस में सूरह बक़र: शुरू कर दी। इस पर एक आदमी अलग हो गया और सलाम फेरा और अकेले नमाज़ पढ़ी और जाने लगा। देखा कि लंबी सूरत पढ़ रहे हैं तो सलाम फेर के अलग हो गया और आकर अलग नमाज़ पढ़ ली। इस पर लोगों ने उसे कहा कि हे अमुक़ !क्या तू मुनाफ़िक़ हो गया है? उसे बुरा भला कहा। उसे कहा तुम मुनाफ़िक़ हो गए हो तुमने बाजमाअत नमाज़ छोड़ी है और अलग नमाज़ पढ़ रहे हो। इस पर उसने जवाब दिया। नहीं, ख़ुदा की क़सम मैं मुनाफ़िक़ नहीं हूँ और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में जाऊँगा और ज़रूर आप को यह बताऊँगा कि मैं ने यह किया था। मुनाफ़क़त होती तो मैं छुप जाता। मैं तो यह बात जा कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताऊँगा। अत: वह व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और निवेदन किया हे रसूलुल्लाह! हम पानी लाने वाले ऊंट रखते हैं अर्थात ऊंटों पर पानी एक जगह से दूसरी जगह ले के जाते हैं और लोगों के घरों में पानी पहुंचाते हैं तो दिन-भर काम करते हैं और हज़रत मुआज़ रज़ि ने आप के साथ इशा की नमाज़ अदा की फिर आकर सूरह बकरा शुरू कर दी। आप के साथ नमाज़ पढ़ी फिर हमारे पास हमारे मुहल्ला में आए और नमाज़ शुरू कर दी। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत मुआज़ रज़ि की तरफ़ ध्यान देते हुए और फ़रमाया कि हे मुआज़ !क्या तुम परीक्षा में डालने वाले हो? लोगों को क्यों मुश्किल में डालते हो? यह पढ़ा करो। और फिर आप ने बताया कि सूरतों में क्या पढ़ना है। यह पढ़ा करो। दो बार कहा यह पढ़ा करो। ये पढ़ा करो। हज़रत जाबिर रज़ि से रिवायत है कि आप ने फ़रमाया

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى और وَالضُّحٰى،وَاللَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى और وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا की तिलावत किया करो। ये चार उदाहरण के तौर पर आप ने उनको वर्णन फ़रमाएं। यह सही मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम किताबुस्सलात बाब अल-किराअत फिल इशा, हदीस नम्बर 465)

बुख़ारी में एक रिवायत इस तरह भी बयान हुई है। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी कहते थे कि सामने से एक आदमी पानी उठाने वाले दो ऊंट लिए आ रहा था। रात हो चुकी थी और उसने संयोग से हज़रत मुआज़ रज़ि को नमाज़ पढ़ते हुए पाया। मस्जिद में नमाज़ हो रही थी। वह इमामत करा रहे थे तो उसने अपने ऊंट बिठा दिए और हज़रत मुआज़ रज़ि की तरफ़ चला आया। हज़रत मुआज़ रज़ि ने सूरह बकर: या सूरह निसा पढ़ी तो वह नमाज़ छोड़कर चला गया। उसे ख़बर पहुंची कि हज़रत मुआज़ रज़ि ने इस बात का बुरा मनाया है तो वह आदमी जो ऊंटों वाला था वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हज़रत मुआज़ रज़ि की शिकायत की। तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बार हे मुआज़ ! तुम तो बहुत ही परीक्षा में डालने वाले हो। क्यों लोगों को परीक्षा में डालते हो? इतनी लम्बी लम्बी सूरतें पढ़ कर परीक्षा में डालने वाले हो। क्यों नहीं तुमने

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى،وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا،وَاللَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى

पढ़ी क्योंकि तुम्हारे पीछे बूढ़े और कमज़ोर और ज़रूरत वाले भी नमाज़ पढ़ रहे होते हैं। यह बुख़ारी की रिवायत है जैसा कि मैं ने कहा

(सही अल-बुख़ारी किताबुल अज़ान बाब मन शका इमामाहू इज़ा तूल हदीस 705)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो नमाज़ में छोटी सूरतें पढ़ने के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि को नसीहत का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सूर अल्आला, सूर अल्ग़ाशिया, सूरह अल्फजर और इसी किस्म की कुछ और सूरतों को प्राय फ़र्ज़ नमाज़ों में पढ़ना ज़्यादा पसन्द फ़रमाया करते थे। निसाई ने जाबिर से रिवायत की है कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि एक बार नमाज़ पढ़ा रहे थे कि एक आदमी उनके साथ पीछे से आकर शामिल हुआ। हज़रत मुआज़ रज़ि ने नमाज़ लम्बी शुरू कर दी। कुछ रिवायतों में आता है कि उन्होंने सूरह आले इम्रान या सूरह निसा की तिलावत शुरू कर दी थी। जब नमाज़ लंबी हो गई तो उसने अपनी नमाज़ तोड़ कर एक दूसरे कोने में जा कर अलग नमाज़ शुरू कर दी और फ़ारिग़ हो कर चला गया। नमाज़ के बाद किसी व्यक्ति ने हज़रत मुआज़ रज़ि से इस घटना का वर्णन किया और कहा कि आप नमाज़ पढ़ा रहे थे कि एक व्यक्ति आया और उसने आप के साथ नमाज़ शुरू की परन्तु जब आप ने नमाज़ में देर लगा दी तो वो नमाज़ तोड़ कर अलग हो गया और एक कोने में नमाज़ पढ़ कर चला गया। हज़रत मुआज़ रज़ि ने कहा वह मुनाफ़िक़ होगा। फिर उन्होंने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भी इस घटना का ज़िक्र किया। यहां आप यह बयान फ़र्मा रहे हैं कि हज़रत मुआज़ रज़ि ने ख़ुद ज़िक्र किया और कहा हे रसूलुल्लाह! मैं नमाज़ पढ़ा रहा था कि पीछे अमुक़ व्यक्ति आकर शामिल हुआ परन्तु जब नमाज़ लंबी हो गई तो वह नमाज़ तोड़ कर अलग हो गया और अलग नमाज़ पढ़ कर चला गया। जब उस व्यक्ति को मालूम हुआ कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मेरी शिकायत की गई है तो वह आप की सेवा में हाज़िर हुआ और उसने कहा हे रसूलुल्लाह! मैं आया तो यह नमाज़ पढ़ा रहे थे। मैं उनके साथ नमाज़ में शामिल हो गया परन्तु उन्होंने नमाज़ लम्बी कर दी। आख़िर हम काम करने वाले आदमी हैं। मेरी ऊंटनी बिना चारे के खड़ी थी। मैं ने नमाज़ तोड़ कर मस्जिद के एक कोने में अपनी नमाज़ ख़त्म कर ली और फिर घर जा कर अपनी ऊंटनी को चारा डाला। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह सुनकर हज़रत मुआज़ रज़ि पर नाराज़ हुए और उनसे फ़रमाया मुआज़ क्या तुम लोगों को फ़ित्ना में डालते हो? तुम्हें سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى،وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا،وَالْفَجْرِ اور وَاللَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى के पढ़ने में क्या तकलीफ़ होती थी? तुमने ये सूरतें क्यों नहीं पढ़ीं और लंबी सूरतें क्यों पढ़नी शुरू कर दीं? इस से मालूम होता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन सूरतों को मध्यम सूरतों में क़रार दिया है। विशेष समयों में इन्सान बेशक लंबी सूरतें पढ़ ले या तकलीफ़ और बीमारी की सूरत में छोटी सूरतें पढ़ ले लेकिन औसत सूरतें यही हैं जिनको आम तौर पर ऊंची आवाज़ वाली नमाज़ों में पढ़ना चाहिए।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 8 पृष्ठ 479 तफ़सीर सूरह अल-फ़जर)

बहरहाल यह भी याद रखना चाहिए कि यह आवश्यक नहीं कि यही सूरतें पढ़ी जाएं। सिर्फ उसूली हिदायत यह है कि जब बाजमाअत नमाज़ अदा हो रही हो तो ज़्यादा लम्बी सूरतें नहीं पढ़नी। लेकिन अपने हालात के अनुसार और कुछ लोगों को जिस जिस तरह सूरतें याद होती हैं, कुछ को छोटी सूरतें याद हैं। इमामत के लिए और कोई भी नहीं मिलता और उसी को नमाज़ पढ़ानी पड़ती है तो वह भी पढ़ाई जा सकती हैं। उसूली हिदायत यह है कि बाजमाअत नमाज़ में लम्बी सूरतें नहीं पढ़ानी क्योंकि विभिन्न तरह के लोग होते हैं। बूढ़े भी होते हैं, बीमार भी होते हैं, काम करने वाले भी होते हैं।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि कहते हैं कि मैं सवारी पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे बैठा हुआ था। मेरे और आप के बीच कजावा का पिछला हिस्सा था। आप ने फ़रमाया हे मुआज़ बिन जबल !मैं ने कहा मैं हाज़िर हूँ हे रसूलुल्लाह और यह मेरा सौभाग्य है। फिर आप थोड़ी देर चले और फ़रमाया हे मुआज़ बिन जबल मैं ने फिर निवेदन किया लब्बैक हे रसूलुल्लाह! मेरा सौभाग्य है। फिर आप थोड़ी देर चले और फ़रमाया हे मुआज़ बिन जबल मैं ने निवेदन किया लब्बैक हे रसूलुल्लाह यह मेरा सौभाग्य है। फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि अल्लाह का बन्दों पर क्या हक़ है? मैंने कहा अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं। फ़रमाया अल्लाह का बंदों पर यह हक़ है कि वह उस की इबादत करें। अर्थात बंदे अल्लाह की इबादत करें और किसी को उस का भागीदार न बनाएँ। फिर आप कुछ देर चले और फ़रमाया हे मुआज़ बिन जबल मैं ने निवेदन किया लब्बैक हे रसूलुल्लाह यह मेरा सौभाग्य है। फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि बंदों का अल्लाह

पर क्या हक़ है? पहले तो अल्लाह का हक़ है जो बंदों ने अदा करना है। अब बंदों का अल्लाह पर क्या हक़ है। जब वह ऐसा करें, जब वे बात मान लें बंदे अपना हक़ अदा कर दें तो फिर बंदों का अल्लाह पर क्या हक़ बन जाता है तो मैं ने कहा अल्लाह और उस का रसूल बेहतर जानते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह उन्हें अज़ाब न दे। जो इस तरह अल्लाह तआला की बात मानने वाले हैं फिर ये बंदों का हक़ बनता है कि अल्लाह तआला उन्हें अज़ाब न दे। यह सही मुस्लिम की रिवायत है।

(सही मुस्लिम किताबुल ईमान बाब अद्दलील अला मन मात अत्तौहीद ... हदीस 30)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं एक सफ़र में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ था। एक दिन मैं आप के क़रीब हुआ और हम चल रहे थे तो मैं ने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे कोई ऐसा कर्म बताएं जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे और मुझे आग से दूर कर दे। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया: तुमने तो एक बड़ी बात पूछी है। बहुत बड़ी बात है यह। हाँ यह बात उस के लिए आसान है जिस पर अल्लाह तआला आसान कर दे। फिर आप ने फ़रमाया कि अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न बनाओ, नमाज़ स्थापित करो, ज़कात दो, रमज़ान के रोज़े रखो और बैयतुल्लाह का हज करो। फिर फ़रमाया क्या मैं ख़ैर के दरवाज़ों के बारे में न बताऊं। यह बात बयान कर के फिर आप ने फ़रमाया कि ख़ैर के दरवाज़ों के बारे में बताता हूँ। फ़रमाया कि रोज़ा ढाल है और सदक़ा गुनाहों को ऐसे बुझाता है जैसे पानी आग को और रात के मध्य आदमी का नमाज़ पढ़ना अर्थात तहज्जुद पढ़ना। फिर आप ने यह आयत पढ़ी।

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّ طَمَعًا وَّ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ۔ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ۔

अर्थात कि उनके पहलू बिस्तरों से अलग हो जाते हैं जबकि वे अपने रब को भय और आशा की हालत में पुकार रहे होते हैं।

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّ طَمَعًا۔

और जो कुछ हमने उनको प्रदान किया वह इस में से ख़र्च करते हैं। अत: कोई जीवित नहीं जानता कि उनके लिए आँखों की ठंडक में से क्या कुछ छुपा कर रखा गया है उस के बदला के तौर पर जो वह किया करते थे।

फिर फ़रमाया क्या मैं तुमको उन सबकी बुलंद चोटी और उस का सतून और इस की बुलंदी का ऊपर का हिस्सा न बताऊं। फ़रमाया वह जिहाद है। फिर फ़रमाया क्या मैं तुमको ऐसी बात न बताऊं जिस पर इस सब की नींव है अर्थात बुनियाद है। इस के गिर्द सारी चीज़ें घूमती हैं। मैं ने निवेदन किया ज़रूर हे रसूलुल्लाह! इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़बान को पकड़ा और फ़रमाया कि इस को रोक रखो। ज़बान को पकड़ के फ़रमाया इस को रोक रखो। मैं ने निवेदन किया हे अल्लाह के नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या हमारा बदला इस पर होगा जो हम उस के द्वारा कहते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तेरा भला हो मुआज़! लोगों को औंधे मुँह आग में नहीं गिराती परन्तु उनके ज़बानों की काटी हुई फ़सलें।

(सुनन इब्ने माजा किताबुल फ़ितन बाब कफ्फुल लिसान फिल्फितनते हदीस 3973)

अर्थात जो तुम ज़बान से बातें करते हो, तेज़ बातें करते हो। ज़बान से दिए गए ज़ख़्म ऐसे हैं जो भावनात्मक कष्ट भी पहुंचाते हैं। जो फ़ित्ना पैदा करते हैं और बहुत सारी बुराईयां जिनसे पैदा होती हैं तो ये चीज़ें, ज़बान से कही हुई बातें जब ज़बान वर्णन कर रही हो, बुराईयां वर्णन कर रही हो या बुराई का माध्यम बन रही हो तो फिर आप ने फ़रमाया कि वह उनको औंधे मुँह आग पर गिराने वाली होती हैं। इसलिए ज़बान को सँभाल के प्रयोग करो और इस से अच्छी अच्छी बातें की जाएं।

हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि कहते थे कि हज़रत मुआज़ बिन जबल और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन में और हज़रत अबू बकर रज़ि के ज़माना में मदीना में फ़तवा दिया करते थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 2 पृष्ठ 265 मुआज़ बिन जबल। दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

मुहम्मद बिन सहल बिन अबू ख़ैसम: अपने पिता से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में मुहाजरीन के तीन आदमी और अन्सार में से तीन आदमी फ़तवा दिया करते थे वे हज़रत उमर रज़ि, हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत अली रज़ि, हज़रत उबई बिन क़अब रज़ि, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि और हज़रत ज़ैद बिन साबित थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 2 पृष्ठ 267 बाब अहले इल्म वल-फ़तवा मिन अस्हाबे रसूलुल्लाह, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

अब्दुर्रहमान बिन क़ासिम अपने पिता से रिवायत करते हैं कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि को जब कोई ऐसा मामला पेश आता जिसमें वह राय वालों और फ़िक़्हा वालों का मश्वरा लेना चाहते तो आप मुहाजरीन तथा अन्सार के आदमियों को बुलाते। हज़रत उमर रज़ि, हज़रत उसमान रज़ि, हज़रत अली रज़ि, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि, हज़रत उबई बिन क़अब रज़ि और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि को बुलाते। ये सारे हज़रत अबूबकर रज़ि के ज़माना ख़िलाफ़त में फ़तवा दिया करते थे।

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 2 पृष्ठ 267 बाब अहले इल्म वल-फ़त्वा मिन असहाबे रसूलुल्लाह। दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

अर्थात कि इफ्ता कमेटी के ये मेंबर थे या उनको आप ने अधिकार दिया था कि फ़त्वा दे दिया करो अपने इस इल्म के कारण से जो उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सीखा था।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि हज़रत अबू बकर रज़ि के ज़माना में शाम चले गए और वहां रहने लग गए। जिस वक़्त हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि शाम रवाना हो गए तो हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि उनकी रवानगी ने मदीना और मदीना वालों को फ़िक़्ह में और जिन मामलों में वह उनको फ़तवा दिया करते थे मुहताज बना दिया है। हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत अबू बकर रज़ि से निवेदन किया कि लोगों को उनकी ज़रूरत है, उन्हें रोक लें। परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ि ने यह कहते हुए इन्कार कर दिया कि जिस व्यक्ति ने इरादा कर लिया हो और वह शहादत चाहता हो मैं उस को नहीं रोक सकता। हज़रत उम्र रज़ि कहते हैं कि मैं ने कहा अल्लाह की कसम आदमी को उस के बिस्तर पर भी शहादत प्रदान कर दी जाती है

(अत्तबकातुल कुब्रा भाग 2 पृष्ठ 265 मुआज़ बिन जबल दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

सवर बिन यज़ीद वर्णन करते हैं कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि जब रात को नमाज़ तहज्जुद अदा करते थे तो यह दुआ मांगा करते थे कि हे अल्लाह आँखें सोई हुई हैं और सितारे टिमटिमा रहे हैं। तो हय्यो क़य्यूम (स्वंय ज़न्दा और दूसरों के ज़िन्दगी देने वाला) है। हे अल्लाह जन्नत के लिए मेरी मांग सुस्त है और आग से मेरा भागना कमज़ोर और ज़ईफ़ है। हे अल्लाह !मेरे लिए अपने हाँ हिदायत रख दे जिसे क़यामत के दिन तू मुझे लौटा दे। अवश्य तू वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 188 मआज़ बिन जबल दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

क्या ख़ौफ़ और भय का स्थान है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जबकि हज़रत मुआज़ रज़ि पालान पर आप के पीछे सवार थे। फ़रमाया हे मुआज़ बिन जबल उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल हाज़िर हूँ, हज़ूर की सेवा में हूँ। आप ने फ़रमाया हे मुआज़ उन्होंने कहा हाज़िर हूँ हे अल्लाह के रसूल आप की सेवा में हूँ। फ़रमाया मुआज़ उन्होंने कहा हाज़िर हूँ हे रसूलुल्लाह आप की सेवा में हूँ। तीन बार आप ने पुकारा। फिर फ़रमाया जो कोई भी अपने दिल की सच्चाई से यह गवाही देगा कि अल्लाह के सिवा कोई भी उपास्य नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं तो अल्लाह ज़रूर उसको आग पर हराम कर देगा। उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह क्या मैं लोगों को इस के बारे में ख़बर न दूं? वे ख़ुश हो जाऐंगे। ये बातें लोगों को जा के बताऊं? आप ने फ़रमाया तब तो वे भरोसा कर लेंगे कि इतनी बात कह ली है और बाक़ी नेकियां नहीं करेंगे, इसलिए लोगों को नहीं बताना। हज़रत मुआज़ रज़ि ने मरते वक़्त यह बात बतलाई थी कि वह गुनाह से बच जाएं। अर्थात कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बताई हुई बात को आगे नहीं बताया।

(सही बुख़ारी किताबुल इल्म बाब मन ख़स्सा बिलइल्म क़ौमा..हदीस 128)

यह उनका विचार था कि शायद यह बात मुझे मरते हुए आगे इल्म वाले लोगों को पहुंचा देनी चाहिए। फिर आप ने बताई लेकिन अपनी ज़िन्दगी या सेहत की हालत में नहीं बताई। हज़रत वली उल्लाह शाह साहिब रज़ि ने कुछ हदीसें जो उस के बारे में हैं उनके हवाले से वर्णन करते हुए शरह बुख़ारी में लिखा है कि फिर इस को भी यहां वर्णन किया है कि यहां यह बात जो की गई है कि किसी इल्मी बात को ख़ास लोगों में सीमित करना। क्योंकि यह इल्मी बात है इसलिए उस को विशेष लोगों में सीमित करना है क्योंकि आम लोग उस के सही अर्थ तक न पहुंचने की वजह से नुक़्सान उठाएँगे। सिर्फ इतना कह देना और बाक़ी कोई कर्म न करना। यह न हो कि एक बात पहुंच जाए कि لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ कह दिया और किसी कर्म

की ज़रूरत नहीं। अब ऐसे भी देखें कि इस के बावजूद व्यवहार में मुसलमानों का यही हाल है कि सिर्फ नाम के मुसलमान हैं। कलिमा पढ़ कर समझते हैं किसी कर्म की ज़रूरत नहीं।

फिर हज़रत शाह साहिब रज़ि लिखते हैं। वे विभिन्न हदीसें वर्णन कर रहे थे और यह भी इस में शामिल थी कि इस हदीस ने इस किस्म की बातों की नौईयत स्पष्ट कर दी है। फिर लिखते हैं कि मुस्लिम ने भी हज़रत इब्ने मसूद रज़ि की एक रिवायत सही सनद से बयान की है जिस में ये अलफ़ाज़ हैं مَا اَنْتَ بِمُحَدِّثٍ قَوْمًا حَدِيْثًا لَا يَبْلُغُهٗ عُقُوْلُهُمْ اِلَّا كَانَ لِبَعْضِهِمْ فِتْنَةً۔ आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेशों का अभिप्राय यह है कि लोगों को उनकी अक़्ल और समझ के अनुसार सम्बोधन करना चाहिए क्योंकि कुछ बातें फ़ित्ना में मुब्तला कर देती हैं। बहरहाल वह फिर आगे लिखते हैं कि हम अब भी देखते हैं कि मोमिन बनाने वाले लोगों ने किस तरह ला इलाहा इल्लल्लाह के केवल ज़बानी इक़रार को अपने लिए आड़ बना रखा है और शरीयत के कष्टों से मानव जाति इन्सान को आज़ाद कर के उनको ईमान का सर्टीफ़िकेट दे देना हैं और صِدْقًا مِّن قَلْبِهٖ अर्थात उस की ज़रूरी बातों का कुछ ध्यान नहीं करते। हर मौलवी, हर मिंबर का ख़ुतबा देने वाला वह समझता है कि जो मेरे पीछे नमाज़ें पढ़ रहा है उसने वही कलिमा पढ़ लिया तो सर्टीफ़िकेट मिल गया। बाक़ी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। फिर आप लिखते हैं कि ज़बान से इक़रार करने वाले इन्हीं मोमिनों के होते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि ईमान उस वक़्त न दिलों में होगा न ज़बान पर बल्कि सुरय्या पर होगा। यह आख़िरी ज़माना के बारे में है। जबकि वे लोग मौजूद थे और यह कलिमा पढ़ने वाली बात भी आप ने कहा था। फिर आप हैं कि مَنْ لَقِيَ اللّٰهَ لَا يُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا۔ अर्थात जो व्यक्ति मौत तक हर किस्म के शिर्क से बचता रहेगा वह जन्नत में दाख़िल होगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हज़रत मुआज़ रज़ि को दो तीन बार सम्बोधित कर के ख़ामोश हो जाना और फिर यह बात बतलाना ये उसी मूल के अनुसार है कि आप ने जुस्तजू के बारे में एहसास और इच्छा को उभारा है। दो तीन बार जब उन्होंने कहा हाज़िर हूँ, हाज़िर हूँ, लब्बैक तो ध्यान पैदा हुआ, शौक़ पैदा हुआ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या फ़रमाना चाहते हैं। जब जोश और एक सच्चा ध्यान पैदा हो गया तो फिर आप ने उनको बताया। फिर शाह साहिब यह लिखते हैं कि ताकि आप की बात अच्छी तरह याद हो जाए और इस का प्रभाव नफ़्स पर क़ायम रहे। यह बात ज़हन नशीन कराने के लिए आप ने तीन बार उनको ध्यान दिलाया था। हज़रत मुआज़ रज़ि ने भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश का पूरा सम्मान किया और मरते वक़्त वह बतलाया कि शायद एक निहायत ज़रूरी बात के न बताने से उनसे सवाल न हो।

(उद्धरित सही अल-बुख़ारी अनुवाद भाग 1 पृष्ठ 211-212 प्रकाशित नज़ारत इशाअत रब्वह)

यह न हो कि अल्लाह तआला कहे कि तुम्हारे इल्म में एक बात आई और तुमने आगे नहीं बताई अर्थात इल्मी बात कम से कम इल्म रखने वाले लोगों तक पहुंच जानी चाहिए।

वैसे तो आज कल मुसलमान ईमान का दावा करते हैं, कलिमा पढ़ कर समझते हैं कि शिर्क से पवित्र हो गए हैं लेकिन दिल शिर्क से भरे हुए हैं। भरोसा सांसारिक चीज़ों पर है। बड़े बड़े ख़तीब भी दुनियावी चीज़ों पर भरोसा करते हैं। उनकी यदि असली हालत, हक़ीक़त जानी जाए तो यह जो हदीस पहले वर्णन हुई है, कलिमा पढ़ने वालों पर आग हराम होने का जो वर्णन हुआ है इस से यह बात भी स्पष्ट होती है कि यह बदला अल्लाह तआला ने देना है और किसी इन्सान का काम नहीं है कि किसी कलिमा कहने वालों, किसी मुसलमान पर फ़त्वा लगाए कि किस को हमने मुसलमान कहना है और किस को ग़ैर मुस्लिम बनाना है। यह तथाकथित फ़तवा क़ुरआन की शिक्षा के भी ख़िलाफ़ हैं। अत: आजकल जो मुसलमान रबी उल-अव्वल के हवाले से मीलादुन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) भी मना रहे हैं तो असल तो यह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा और आदर्श को हम अपनाएं। अपने इल्म के ध्यान में केवल अपने आप को मुसलमान न समझें बल्कि कलमा पढ़ने वालों के मामले को अल्लाह तआला पर छोड़ें। ये बातें हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रूह को ख़ुश करने वाली होंगी। उनकी उम्मत की तरफ़ से ख़ुशी पहुंचाने वाली होंगी। आप पर दुरूद भेजने के साथ अल्लाह तआला का इस बात पर शुक्र करे कि उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म को लावारिस नहीं छोड़ा बल्कि वादा के अनुसार और आप की भविष्यवाणी के अनुसार धर्म के संस्कार के लिए मसीह मौऊद को भेजा है जो इस कलिमा और शरीयत के आदेशों पर अनुकरण की हक़ीक़त हमें बताने वाला है ताकि हक़ीक़त में जहन्नुम की आग हम पर हराम हो। और अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम के इन्कार करने वालों को भी अक़्ल दे कि इस बात को समझें। और हमें भी अल्लाह तआला इस्लाम की वास्तविक शिक्षा और कलिमा की हक़ीक़त को समझने और उस पर अनुकरण करने वाला बनाए।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि वर्णन करते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंगे तबूक के साल निकले। आप नमाज़ें जमा करते थे। आप ज़ुहर, अस्र और मग़रिब, इशा इकट्ठी अदा फ़रमाते। एक रोज़ आप ने नमाज़ में कुछ देरी फ़रमाई। आप बाहर तशरीफ़ लाए और ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें जमा कीं। फिर अन्दर तशरीफ़ ले गए। इस के बाद बाहर तशरीफ़ लाए और मग़रिब और इशा की नमाज़ें इकट्ठी अदा कीं। फिर हज़ूर ने फ़रमाया कि कल तुम इंशा अल्लाह तबूक के चश्मा पर पहुँचोगे। यह अभिप्राय नहीं था कि चारों नमाज़ें इकट्ठी पढ़ते थे। जब तक वक़्फ़ा थोड़ा होता था तो हो सकता है कि ज़ुहर अस्र की नमाज़ें अस्र के साथ आख़िरी वक़्त में जमा कर ली जाती हों और मग़रिब इशा की मग़रिब के पहले वक़्त में। बहरहाल फ़रमाया कि कल तुम इंशा अल्लाह तबूक के चश्मे पर पहुँचोगे और जब तक ख़ूब दिन न निकल आए तुम उस तक नहीं पहुँचोगे। अर्थात अंदाज़ा लगा के आप ने बताया कि तुम लोग दिन के वक़्त पहुँचोगे। अत: तुम में से जो उस के पास पहुंचे उस के पानी को बिल्कुल न छूए जब तक कि मैं न आ जाऊं। वहां पहुंच के पानी न पीने लग जाना। न छेड़ना उस को जब तक मैं उस पर न आ जाऊं। रावी कहते हैं फिर हम उस चश्मा पर पहुंचे लेकिन दो आदमी वहां हमसे पहले पहुंच चुके थे और चश्मा तस्मा की तरह था जिस से थोड़ा थोड़ा पानी बह रहा था, बड़ी बारीक धार बन रही थी। रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दोनों से पूछा क्या तुमने उसके पानी को छुआ है? पानी को छेड़ा तो नहीं? इन दोनों ने कहा जी हाँ हमने इस में से पानी निकाला था, पिया है। फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दोनों को डांटा कि मैंने तुम्हें रोका था तो क्यों तुमने उस को छुआ और जो अल्लाह तआला ने चाहा आप ने उनको कहा। रावी कहते हैं फिर लोगों ने इस चश्मा से अपने हाथ से थोड़ा थोड़ा कर के पानी निकाला यहां तक कि एक बर्तन में कुछ पानी जमा हो गया। बिल्कुल बारीक सी धार पानी की आ रही थी। रावी कहते हैं फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस में अपने दोनों हाथ धोए और चेहरा धोया। फिर उस पानी को इस चश्मे में वापस डाल दिया अर्थात वहीं चश्मे के ऊपर बैठ के धोया। चेहरा भी धोया और पानी वहीं चश्मे में गिरता जाता था तो चश्मा तेज़ी से बहने लगा जब आप ने मुँह हाथ धोया और वहीं पानी डाल दिया तो चश्मा जिस की पहले बारीक धार बन रही थी तेज़ी से बहने लगा यहां तक कि लोग ख़ूब सेराब हो गए। फिर हज़ूर ने फ़रमाया हे मुआज़ ! अगर तेरी उम्र लंबी हुई तो तू देख लेगा कि यह जगह बाग़ों से भर गई है। (सही मुस्लिम किताबुल फ़ज़ाइल बाब फ़ी मुजज़ातुन्नबी हदीस 706)

हदीस की पुस्तकों से मालूम होता है कि यह मोजिज़ा उस वक़्त हुआ जबकि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तबूक के स्थान पर अभी पहुंचे ही थे। सीरत इब्ने हश्शाम में है कि यह घटना तबूक के स्थान से वापसी पर एक वादी में हुई जिसका नाम मुशक़्क़क़ है।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्ने हिश्शाम पृष्ठ 821-822 जंग तबूक फ़ी रजब सन तिसआ प्रकाशन दारुल कुतुब बिल्अलमिया 2001 ई)

यह घटना हज़रत इमाम मालक ने अपनी किताब मोता में भी वर्णन की है। मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी ने इस हदीस की शरह बयान करते हुए यह लिखा है कि अब्बू वलीद बाजी कहते हैं कि यह ग़ैब की ख़बर है जो घटित हो चुकी है और हज़रत मुआज़ रज़ि का विशेष रूप से वर्णन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसलिए फ़रमाया क्योंकि मुल्क शाम मुंतक़िल हो गए थे और वहां उनकी वफ़ात हुई थी। आप को वह्य के द्वारा मालूम हुआ कि हज़रत मुआज़ रज़ि यह जगह देखेंगे और वह वादी आप की बरकत के कारण से दरख़्तों और बाग़ों का मजमूआ बन जाएगी।

अल्लामा इब्ने अब्दुल बिर्र कहते हैं कि इब्ने वज़्ज़ाह कहते हैं कि मैंने इस चश्मा के इर्द-गिर्द वह सारे स्थान देखे हैं। दरख़्तों की हरियाली इतनी थी कि शायद यह सिल्सिला क़यामत तक जारी रहे और ऐसी ही आप की भविष्यवाणी थी।

(शरह अज़जर क़ानी अला मोअता भाग 1 पृष्ठ 436 किताब क़सर अस्सलात फिस्सफरे बाब अलजमा बैनस्सलातीन , दार अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत 1997 ई)

एटलस सीरतुन्नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में लिखा है कि तबूक के महिकमा शरीया के रईस ने बताया कि यह चश्मा दो साल पहले तक पौने चौदह सौ साल से निरन्तर उबलता रहा। बाद में निचले इलाक़ों में ट्यूबवेल खोदे गए तो इस चश्मा का पानी इन टयूब वेल्ज़ की तरफ़ स्थानान्तरित हो गया, लगभग पच्चीस टयूब वेल्ज़ में तक़सीम हो जाने के बाद अब यह चश्मा ख़ुशक हो गया है। इस के बाद वह हमें एक ट्यूबवेल की तरफ़ भी ले गए जहां हमने देखा कि चार इंच का एक पाइप लगा हुआ है और किसी मशीन के बग़ैर इस से पानी पूरे ज़ोर से निकल रहा है। क़रीब क़रीब यही कैफ़ीयत दूसरे टयूब वेल्ज़ की भी हमें बताई गई। यह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मोजिज़ा ही की बरकत है कि आज तबूक में इस कसरत से पानी मौजूद है कि मदीना और ख़ैबर के सिवा हमें कहीं इतना पानी देखने का संयोग नहीं हुआ बल्कि हक़ीक़त यह है कि तबूक का पानी इन दोनों जगहों से भी ज़्यादा है। इस पानी से फ़ायदा उठा कर अब तबूक में हर तरफ़ बाग़ लगाए जा रहे हैं और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार तबूक का इलाक़ा बाग़ों से भरा हुआ और दिन प्रतिदिन भरता जा रहा है।

(एटलस सीरत नब्वी पृष्ठ 431 दारुस्सालम रियाज़ 1424 हिज्री)

उनका बाक़ी ज़िक्र इंशा अल्लाह बाद में होगा।

जुम्अ: के बाद में कुछ जनाज़े भी पढ़ाऊंगा इस वक़्त उनका ज़िक्र कर देता हूँ। पहला ज़िक्र मौलवी फ़र्ज़ान ख़ान साहिब का है जो ज़िला ख़ूर्दा व नयागढ़ उडीसा के मुबल्लिग़ इंचार्ज थे। शूगर के मरीज़ थे। 10 सितम्बर को अचानक टाईफ़ाईड और निमोनिया के कारण से आप को हस्पताल दाख़िल किया गया और वहां आप वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजिऊन।

मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी सकीना बेगम के इलावा एक बेटी फ़रीहा और बेटा अज़ीज़म रेहान शामिल हैं। जमाअत के कामों में बहुत आगे बढ़ने वाले थे। परहेज़गार, अपने साथ काम करने वाले मुबल्लग़ीन, मुअल्लेमीन का ध्यान रखने वाले, नरम स्वभाव वाले, विनम्र मिज़ाज, उत्तम अख़लाक़ वाले, इंतिहाई नेक और मुख़लिस इन्सान थे। 1980 ई में जामिया क़ादियान में दाख़िला लिया और 1988 ी में कादियान जामिया से फ़ारिग़ हुए और मैदाने अमल में आए। बड़ी मेहनत और इख़लास और वक़्फ़ की रूह के साथ 32 साल तक सेवा की। कई स्थानों पर इस अर्से में आपने बैअतें करवाईं और जमातें भी क़ायम कीं। उनकी पत्नी सकीना बेगम कहती हैं कि मौलवी साहिब बताते थे कि पहली तक़र्रुरी हरियाणा में हुई। कोई निर्धारित स्थान नहीं था और इस इलाक़े में कोई अहमदी भी नहीं था। यह विभिन्न जगहों पर घूमते थे और तब्लीग़ करते थे और सैंटर क़ायम करते थे और इस दौरान सूबा हरियाणा के एक गांव में पहुंचे, वहां के लोगों को जमाअत का पैग़ाम पहुंचाया। वहां एक स्थानीय व्यक्ति था उसने कहा हमारी भैंस दूध नहीं देती। आपकी जमाअत सच्ची है तो आप दम कर के मुझे दें मैं भैंस को कुछ पिलाऊं ताकि मेरी भैंस दूध दे। अगर आप सच्चे हैं तो फिर अगर यह चमत्कार हो गया तो हम सारा ख़ानदान बैअत कर लेंगे। बहरहाल मौलवी साहिब कहते हैं कि मैंने सूरह फ़ातिहा, दुरूद शरीफ़ पढ़ा और कुछ दुआ के कलिमात पढ़ कर पानी पर दम कर के उस व्यक्ति को दे दिया। वह पानी लेकर चला गया। मौलवी साहिब सारी रात इसी गांव में रहे। कहते हैं कि गांव में एक दरख़्त था। सारी रात में उस के नीचे बैठा रहा और दुआएं करते रात गुज़ार दी कि अल्लाह तआला मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का चमत्कार साबित कर दे। कहते हैं सुबह होते ही मौलवी-साहिब ने देखा कि एक व्यक्ति एक बाल्टी लिए आ रहा है। देखा तो इस में दूध था। कहने लगा मौलवी-साहिब हमारी भैंस ने दूध दिया है और ख़ुशी का इज़हार करते हुए मैं और मेरा पूरा ख़ानदान अब समझ गए हैं कि जमाअत अहमदिया सच्ची है। हम इस में शामिल होते हैं।

उनके बेटे रेहान कहते हैं कि उनमें विनय और विनम्रता बहुत ज़्यादा थी। बड़े नर्म-दिल थे। हर एक से प्यार मुहब्बत से पेश आने वाले। अल्लाह तआला की रज़ा और जमाअत की सेवा के लिए अपनी ज़िन्दगी व्यतीत की। समय के ख़लीफ़ा के हर इरशाद और हिदायत पर लब्बैक कहते थे और हमें भी नसीहत करते थे। हम से हमेशा स्नेह से मुहब्बत से पेश आते। जमाअत के कामों के साथ घर के कामों में भी हिस्सा लेते। माता का हाथ बटाते और सारी ज़िन्दगी उन्होंने अपनी नमाज़ों की भी हिफ़ाज़त की और हमारी नमाज़ों की भी हिफ़ाज़त की। हमेशा हमें सीधे रास्ते पर चलने के लिए कहते थे। उनके साथ काम करने वाले जितने भी मुअल्लेमीन और मुबल्लग़ीन हैं सब यही लिखते हैं कि एक मिसाली मुबल्लिग़ थे। बड़े हमदर्द थे और कभी हमने उनको ग़ुस्से में नहीं देखा।

अगला जनाज़ा अब्दुल्लाह मुलसीको साहिब का है। मलेशिया के स्थानीय मिशनरी थे। 7 अक्तूबर को बेहोश हो गए। हस्पताल ले जाया गया। बच न सके और इसी रात वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजेऊन।

उनकी उम्र 68 साल थी। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा आठ बच्चे शामिल हैं। आप मलेशिया के दो मुरब्बी सलाहुद्दीन साहिब और मसरूर अहमद साहिब के ससुर थे। अब्दुल्लाह मुलसीको साहिब फ़िलीपाइन में पैदा हुए। यूनिवर्सिटी पास करने के बाद मुस्लिम आर्गेनाईज़ेशन "मोरो नैशनल लिबर्ल फ्रंट" में शामिल हो गए। यह संस्था हुकूमत के ख़िलाफ़ थी। इस का उद्देश्य फ़िलपाइन में इस्लामी रियासत क़ायम करना था। 1973 ई में उनके माता पिता हिजरत करके फ़िलपाइन से मलेशिया आ गए और सन्दा कुन सबह (Sandakan Sabah) में रिहायश धारण की। बहरहाल उनको अल्लाह तआला ने नेक दिल दिया था। उनको ख़्वाब में कई बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़लीफ़तुल मसीह सानी और ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की ज़यारत हुई। अल्लाह तआला की इच्छा के अधीन उनको 1973 ई में जलसा सालाना ताकीना बालू प्रान्त में शामिल होने का अवसर मिला और वहां जलसा देख के सारी सूरत देख कर उनके ईमान में वृद्धि का कारण बनी अत: उन्होंने बैअत कर ली। सुन्दाकन में आप जिस जगह रहते थे वहां कोई मुबल्लिग़ नहीं था और आप एक प्यासी रूह थे। अत: इस प्यास को बुझाने के लिए आपने जमाअत के लिट्रेचर का ख़ूब अध्ययन किया। तब्लीग़ का बहुत शौक़ था। अपने इस शौक़ को व्यावहारिक रूप दिया, दोस्तों रिश्तेदारों और अपने इलाक़ा में ख़ूब तब्लीग़ की। इस के नतीजा में बहुत से लोग अहमदियत में शामिल हुए, इस्लाम में शामिल हुए और तब्लीग़ के इस शौक़ के कारण से आपने अपने आपको वक़्फ़ भी किया और फिर मुबल्लिग़ के रूप में उनका निर्धारण हुआ। फिर इसी तरह उनको फ़िलीपाइन में कुछ साल ख़ैरुद्दीन बारोस साहिब के साथ भी काम करने का अवसर मिला। बहरहाल अपनी नेक फ़ितरत, इल्म का शौक़ और विनम्रता और विनय और अल्लाह तआला के भय के कारण से उन्होंने वहां भी बड़ा काम किया। और ईसाइयों से भी मुबाहसे करते रहते थे। कई लोगों को इस्लाम में ले आए । उर्दू बोल नहीं सकते थे लेकिन सीखने का शौक़ था। कई हवाले याद थे, नज़्में याद थीं। हमेशा मेहमान नवाज़ी का बड़ा शौक़ था। जुम्अ: पर आने वालों की ख़ासतौर पर मेहमान नवाज़ी किया थे। disciplined आदमी थे और यह चाहते थे हर कोई इन्सान जो है उसको डिसिप्लिन में रहना चाहिए और इस के अनुसार तरबियत करते थे। कुछ साल से चलने फिरने का कष्ट था। इस के बावजूद कभी अपने इस कष्ट को अपने काम में आड़े नहीं आने दिया।

तीसरा जनाज़ा अब्दुल वाहिद साहिब मुअल्लिम सिल्सिला कादियान का है जो 12 सितम्बर को 56 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजेऊन।

उनका सम्बन्ध ईसाई घराने से था। उनके ख़ानदान में सबसे पहले उनके बड़े भाई जो रिटायर मुअल्लिम थे उन को बैअत का सौभाग्य प्राप्त हुआ। फिर बाद में सारी फ़ैमली ने बैअत कर ली। अहमदियत स्वीकार करने के बाद मरहूम ने जामेअतुल मुबश्शरीन में तीन साल का कोर्स किया। वहां से फ़ारिग़ हो कर फिर विभिन्न इलाक़ों में तब्लीग़ के लिए गए। क़ादियान के विभिन्न इलाक़ों में भी शिक्षा तथा तर्बीयत की ज़िम्मेदारी उनको सौंपी गई। बड़े इताअत वाले और पूरी लगन से काम करने वाले थे। तब्लीग़ का बहुत अच्छा सलीक़ा आता था। उनके द्वारा क़ादियान के तीन ईसाई और तीन ग़ैर अहमदी परिवार जमाअत में शामिल हुए और उनमें से भी दो लोग अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी हैं अर्थात कि केवल शामिल नहीं हुए बल्कि नेकी में बढ़ने वाले हैं। उनके पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त एक बेटा और दो बेटियां शामिल हैं और उनका जो बेटा है इस साल जामिया अहमदिया से मुरब्बी बन के पास हुआ है।

अल्लाह तआला इन सब मरहूमीन के दर्जात बुलंद फ़रमाए। इन सबसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी औलादों को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और उनकी जो इच्छाएं थीं कि जिस तरह उनकी औलाद की तर्बीयत हो अल्लाह तआला उस के अनुसार करे और उन में से कुछ बच्चे जो वक़्फ़ ज़िन्दगी भी हैं, यह ख़िलाफ़त के सही सुल्तान बनने वाले हों। अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। जैसा कि मैंने कहा नमाज़ जुम्अ: के बाद इंशा अल्लाह नमाज़ जनाज़ा अदा करूँगा।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 13 नवम्बर 2020 ई पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

और आप लोगों ने किसी किस्म का कोई credit नहीं लिया। आप लोगों ने एक सादा मस्जिद बनाई। आख़िर पर महोदय ने दुबारा मुबारकबाद प्रस्तुत की और कहा कि इस मस्जिद का बनना आप लोगों के लिए मुबारक हो।

इसके बाद 5 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मेहमानों से ख़िताब फ़रमाया

मस्जिद बैयतुल बसीर के उद्घाटन में

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ख़िताब

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद, ताव्वुज़ और तस्मिया के बाद फ़रमाया:

समस्त सम्मान्नीय मेहमान!

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाहू व बरकताहू

अल्लाह तआला आप सबको सलामती और अमन से रखे। सबसे पहले तो मैं आप सब मेहमानों का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं जो हमारे इस मस्जिद के उद्घाटन के फंक्शन में पधारे। मुझे यह विचार नहीं था कि इस छोटे से स्थान पर इतने लोग जो जमाअत अहमदिया के मेंबर नहीं हैं और ग़ैर मुस्लिम भी हैं वे आ सकेंगे। परन्तु आप का यहां आना इस बात को प्रदर्शित करता है कि आप लोग खुले और रोशन दिमाग़ के लोग हैं। दूसरा मुझे इस बात की ख़ुशी है कि आपका यहां आना किसी परिचय के कारण से है और जमाअत अहमदिया के मेंबर इस क्षेत्र में खुले दिल के साथ आप लोगों के साथ मेल-जोल भी रखते हैं और आप लोग भी उनको स्वीकार करते हैं और यह जो अच्छे आपसी सम्बन्ध हैं इसके कारण से आप हमारी इस मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर तशरीफ़ लाए जो हमारे लिए तो ख़ुशी का कारण है ही, परन्तु हमारी ख़ुशी में शामिल होने के लिए आप का यहां आना इस ख़ुशी को और भी बढ़ाता है कि अहमदी मुसलमान वास्तव में अपने पड़ोसियों का भी ध्यान रख रहे हैं और पड़ोसियों से भी सम्बन्ध पैदा कर रहे हैं। इस शुक्रिया के बाद मैं कुछ बातें कहूँगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अमीर साहिब ने बताया कि यह छोटा सा गांव है और इस छोटी आबादी में यह हमारी पहली मस्जिद बन रही है। छोटा गांव होना, या बड़ा शहर होना कोई महत्त्व नहीं रखता। असल चीज़ तो वहां के लोगों का आचरण और उनका आपस में मेल-जोल रखना है और इस बात को समझना है। बल्कि छोटे स्थान पर सादगी और श्रद्धा अधिक होती है। छोटे शहरों में रहने वाले, कस्बों में रहने वाले या गांव में रहने वालों की तुलना में शहर के लोगों से अधिक सादा होते हैं। और यह एक बहुत अच्छी चीज़ है। इसी लिए बहुत सारे लोग जो शहर में रहने वाले हैं पसन्द करते हैं कि बाहर जाकर अपने घर बनाएँ और रहें। मैं यूके में रहता हूँ, वहां तो यह बड़ा रिवाज है कि जो लोग afford कर सकते हैं वे बाहर जाकर खुले माहौल में अपना घर बनाते हैं। इसका एक लाभ यह कि एक सादगी का माहौल है, दूसरा सबसे बड़ा लाभ यह है कि खुली फ़िज़ा है और हर किस्म की pollution से साफ फ़िज़ा है, ताज़ा हवा उपलब्ध है। इस दृष्टि से मैं समझता हूँ यह स्थान हमारे लिए , यद्यपि छोटा है, परन्तु यहां के रहने वाले जिस तरह खुली फ़िज़ा में रह कर अपने आप को हरदम हवा से ताज़ा रखते हैं इसी तरह मुझे यह भी उम्मीद है कि यह लोग सादगी के कारण से अपने इख़लास को भी ताज़ा रखने वाले होंगे। और अपने पैदा करने वाले से जो सम्बन्ध है इसको भी हमेशा ताज़ा रखने वाले होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया उन्होंने यह भी वर्णन किया है कि यह तारीख़ी स्थान है। तारीख़ बड़ा महत्त्व रखती है और क़ौमों को अपनी तारीख़ की हिफ़ाज़त करनी चाहिए और तारीख़ ही है जो बहुत सारी ऐसी बातें जो दुनिया की नज़र से ओझल हो जाती हैं उनको सामने लाती है। इस्लाम के बारे में बहुत कुछ कहा जाता है, बहुत शंकाएं हैं। यदि हम इस्लामी तारीख़ को देखें तो यह जो शंकाएं हैं कि मुसलमान शायद extremists हैं, कट्टरवादी हैं ,तारीख़ उसको झुठलाती है और जब हम इस्लाम का आरम्भिक ज़माना देखते हैं तो इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके साथियों ने 13 साल मक्का में विरोध का सामना किया, दुश्मनों ने आपको तकलीफ़ें पहुंचाईं, अत्याचार किया, इस्लाम लाने वाले क़त्ल किए गए और फिर आख़िर वे हिजरत करके मदीना चले गए जहां एक छोटा इस्लामी शासन स्थापित हो गया। और जो हुकूमत स्थापित हुई इसमें सब मुसलमान नहीं थे, वहां यहूदियों की भी संख्या थी। उनके साथ मुआहिदा हुए और फिर उस मुआहिदे के अधीन प्रत्येक की जो शरीयत थी उस का क़ानून उनकी समस्याएं हल करने के लिए लागू किया गया और जो साझी बातें थीं उसके लिए एक क़ानून लागू किया गया। इसकी पाबन्दी प्रत्येक पक्ष करता था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर यदि यह कहा जाए कि मुसलमानों में कट्टरता है और उन्होंने जंगें इसलिए लड़ीं कि वे अपना धर्म फैलाएं। यद्यपि इस बारे में मैं पहले भी विभिन्न अवसरों पर बहुत कुछ कह चुका हूँ। शायद जो जमाअत से परिचित हैं उन्होंने पढ़ा भी हो। परन्तु यहां बहुत से लोग ऐसे भी होंगे जिनको इस तारीख़ का इल्म नहीं होगा। संक्षिप्त बता दूं कि हिजरत करके मदीना आने के बाद, इतने ज़ुल्म सहने के बाद, जब आराम से, अमन से उन लोगों ने स्थानीय लोगों से जिनमें विभिन्न धर्मों के लोग भी थे और विभिन्न क़बीलों के थे उनके साथ रहना शुरू कर दिया तो तब भी मक्का के लोगों ने उनको अमन से नहीं रहने दिया और मुसलमानों पर हमला किया। और इस हमले का जंग से जवाब देने का जो पहला आदेश क़ुरआन करीम में ख़ुदा तआला ने नाज़िल फ़रमाया और वह यह था कि यह लोग जो हमला करने वाले हैं यह धर्म के विरोधी हैं और यदि उनका जवाब अब सख़्ती से न दिया गया तो फिर न कोई synagogue बाक़ी रहेगा, न चर्च बाक़ी रहेगा, न कोई राहिब ख़ाना बाक़ी रहेगा, न कोई मस्जिद बाक़ी रहेगी और इस आयत में भी यदि उसका sequence देखें तो मस्जिद का नाम पहले नहीं आया, मस्जिद तो सबसे आख़िर में है। अत: जवाब देना इसलिए ज़रूरी है कि धर्म की सुरक्षा करनी है और यह लोग धर्म के ख़िलाफ़ हैं। इसके बाद यदि किसी भी हमला का, किसी भी जंग की सही समीक्षा की जाए, इन्साफ़ से समीक्षा की जाए तो यही पता लगेगा कि मुसलमानों पर जंग ठोंसी गई, उनको नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश की गई , उन पर हमला किया गया और फिर उसके जवाब में मुसलमानों ने भी जंगें लड़ें। बहरहाल यह तारीख़ बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है और संक्षिप्त से समय में मैंने इस्लाम की तारीख़ भी बता दी है कि यदि पश्चिमी देशों में रहने वालों के दिलों में मुसलमानों के बारे में कोई शंकाएं हैं तो दूर हो जाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कई मुसलमानों की हरकतें भी ऐसी हैं परन्तु अब तो जैसा कि कई वक्ताओं ने वर्णन भी किया कि कई स्थान पर ग़ैर मुस्लिम भी हमले कर रहे हैं तो यह मुसलमानों की शिक्षा नहीं है कि कट्टरता दिखानी है बल्कि यह उन लोगों के अपने व्यक्तिगत कर्म हैं और इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध हैं। बहरहाल इस संक्षिप्त से समय में बता दूं कि यदि मुसलमानों की तरफ़ से कुछ भी कट्टरता हो रही है तो वह उनके व्यक्तिगत कर्म हैं। न इस्लाम की तारीख़ हमें यह बताती है कि यह उचित है और न इस्लाम की शिक्षा हमें यह बताती है कि यह जायज़ है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दूसरे वक्ता जो यहां तशरीफ़ लाए जो आर्मी के अफ़्सर थे उन्होंने बड़ी अच्छी बात की कि उनके दिल में और उनके ख़ानदान में एक भय था जो तीस साल पहले पैदा हुआ जब अहमदी यहां आए और जब love for all, hatred for none का बैनर लगाया तो वह यही समझे कि यह दिखावे का बैनर है। तीस साल पहले इस ज़माना में वह हालात नहीं थे जो आज हैं। परन्तु फिर भी मुसलमानों का एक भय था। वह इस भय का इज़हार तो न कर सके परन्तु दिल में उनको एहसास होता रहा। परन्तु अहमदियों के साथ रह कर तीस साल के लंबे समय ने उनके इस भय को दूर कर दिया और इसलिए कि अहमदियों ने यहां आकर कोशिश की कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का इज़हार कर सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लाम पड़ोसी के हक़ की अदायगी की तरफ़ ध्यान दिलाता है और अहमदियों ने इस बात का इज़हार किया कि पड़ोसी के हक़ किस तरह अदा करने हैं और इस बात ने उनकी शंकाए भी दूर कर दीं। पड़ोसी के हक़ की बात है तो यहां स्पष्ट कर दूं कि क़ुरआन करीम में बड़ी स्पष्टता से पड़ोसी की प्रशंसा की गई है कि वह लोग जो तुम्हारे घरों के साथ रहते हैं वे पड़ोसी हैं, वे लोग जो तुम्हारे साथ काम करने वाले हैं वे तुम्हारे पड़ोसी हैं, वे लोग जो तुम्हारे साथ सफ़र करने वाले हैं तुम्हारे पड़ोसी हैं और इस तरह एक लम्बी सूचि है। और फिर फ़रमाया कि तुम्हारे लिए उनकी इज़्ज़त सम्मान करना ज़रूरी है और फिर इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने पड़ोसी का हक़ अदा करने की मुझे इतनी नसीहत फ़रमाई है कि मुझे एहसास हुआ कि

शायद पड़ोसी को भी जायज़ विरसा में शामिल कर लिया जाएगा। जिसमें शायद उसका जायदाद का हिस्सा भी हो जाएगा। अत: इस सीमा तक इस्लामी शिक्षा पड़ोसी को महत्त्व देती है। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुकरण और हर सच्चे मुसलमान का अनुकरण इस पर गवाह है कि वह पड़ोसी की इज़्ज़त करते रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर values की बात हुई। विभिन्न प्रकार के लोग हैं, सभ्यताएं हैं उनकी अपनी values हैं। वैल्यूज़ तो प्रत्येक की होती हैं , अच्छी भी हैं और स्थापित रहनी चाहिऐं। मूल बात आचरण की वैल्यूज़ हैं और उच्च आचरण हैं जो प्रत्येक के साझे होते हैं। इसलिए यदि आप उच्च अख़लाक़ को स्थापित रखेंगे, उच्च अख़लाक़ की values को स्थापित रखेंगे, उच्च आचरण की क़द्रें स्थापित रहेंगी तो फिर प्रत्येक अपनी रिवायतों की क़दर करता रहेगा। प्रत्येक का अपना कल्चर है, या रिवायतें हैं और धर्म है इसके अनुसार फिर उनकी इज़्ज़त और सम्मान भी रहेगा। यदि इन्सानी क़द्रें स्थापित रहें , आचरण की क़द्रें स्थापित रहें तो फिर किसी प्रकार का, कभी भी कोई conflict पैदा नहीं हो सकता। किसी प्रकार का आपस में कोई झगड़ा नहीं हो सकता। अत: हमेशा हमें याद रखना चाहिए और इस बात की हम अहमदी मुसलमान कोशिश भी करते हैं, और हर अच्छा इन्सान कोशिश करता है कि आचरण की क़दरों की सुरक्षा करे। चाहे विभिन्न सभ्यताएं भी हों , विभिन्न प्रकार के लोग भी हों परन्तु प्रत्येक में अच्छी बातें भी होती हैं और बुरी बातें भी होती हैं, बल्कि कई ऐसी उच्च बातें हैं जिसको दूसरों को भी अपनाना चाहिए। बल्कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो यहां तक फ़रमाया कि हर अच्छी बात जो तुम्हें कहीं से भी मिले, ज़रूरी नहीं कि मुसलमान से मिले, कहीं से भी मिले, किसी भी धर्म से मिल सकती है, किसी भी इन्सान से मिल सकती है चाहे वह किसी भी धर्म पर विश्वास न रखता हो तो समझो कि वह तुम्हारी खोई हुई विरासत है, इसको प्राप्त करो और इस पर अनुकरण करने की कोशिश करो। अत: अच्छी values प्रत्येक में पाई जाती हैं और हर अच्छे इन्सान को उनका सम्मान करना चाहिए। और न केवल सम्मान करना चाहिए बल्कि अपनाना भी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर औरत के अधिकार हैं, उसके बारे में भी इस्लाम ने शिक्षा दी है। इस्लाम ने औरत को शिक्षा का हक़ दिया है। फिर क़ुरआन करीम में यहां तक लिखा है कि मर्द को चाहिए कि अपने घर वालों से अच्छा व्यवहार करे। फिर औरत को विरासत का भी हक़ दिया। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत माँ के क़दमों के नीचे है। अर्थात माँ और औरत वह हस्ती है जो नेक तर्बीयत करके अपनी औलाद को जन्नत में ले जाने वाली होती है और माहौल को जन्नत बनाने वाली होती है, इस समाज को जन्नत बनाने वाली होती है, इस शहर को देश को जहां वह रहती है जन्नत बनाने वाली होती है। अत: इस्लाम औरत की जो इज़्ज़त और सम्मान करता है, इस्लाम ने औरत को जो स्थान दिया है वह यह है कि औरत ही है जो क़ौमों की बनाने में प्रमुख भूमिका अदा करती है। एक नेक औरत, अच्छे आचरण की औरत, पढ़ी लिखी औरत ही अपने बच्चों की ऐसी तर्बीयत कर सकती है कि वह देश तथा क़ौम के सेवक बन सकें। अत: इस दृष्टि से इस्लाम औरत को भी एक स्थान देता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर चर्च के प्रतिनिधि तशरीफ़ लाई थीं। उन्होंने धार्मिक बराबरी की बातें कीं। बहुत अच्छी बात है। धार्मिक बराबरी ज़रूर होनी चाहिए। पहले भी मैं वर्णन कर चुका हूँ कि हमेशा एक दूसरे के विचारों, धर्म का बल्कि जो रिवायत हैं उनका भी पास करना चाहिए, उनका सम्मान करना चाहिए। और तभी धार्मिक बराबरी भी रहती है। क़ुरआन करीम की जो पहली सूरत है इसमें अल्लाह तआला ने यही लिखा है कि अल्लाहो रब्बुल आलमीन है। वह ईसाइयों का भी रब है, वह मुसलमानों का भी रब है, वह यहूदियों का भी रब है, वह हिन्दुओं का भी रब है और हर धर्म का रब है परन्तु जो अल्लाह तआला के वजूद पर विश्वास नहीं रखते उनका भी रब है, उनको पालने वाला है और यही हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला चूँकि पालने वाला है, प्रत्येक को देने वाला है, इसलिए दुनिया की चीज़ों से भी हम लाभ उठाते हैं वह उसकी तरफ़ से ही उपलब्ध होती हैं। इस बात से हटते हुए कि कोई किस धर्म से सम्बन्ध रखता है, अल्लाह तआला प्रत्येक को पाल रहा है। उसने जब यह कह दिया कि रब्बुल आलमीन है तो साथ ही यह भी कह दिया कि रहमान भी है, रहीम भी है। वह बिना मांगे देता है, इन्सानों पर रहम करता है और जो मांगने वाले हैं उनको इस से बढ़कर देता है। मानो कि अल्लाह तआला, चाहे कोई उस की इबादत कर रहा है या नहीं कर रहा, चाहे उस से कोई मांगता है या नहीं मांगता, उस की रहमानियत इस बात की मांग करती है कि वह प्रत्येक को अपने रहम से नवाज़ता रहे और इसकी ज़रूरतों को पूरा करता रहे। और जो मांगने वाले हैं उनको और भी अधिक बढ़कर देने वाला है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर चर्च के प्रतिनिधि ने कई बातें भी कहीं हमारे मध्य मतभेद हैं, औरत के बारे में या अमुक अमुक चीज़ के बारे में मतभेद हैं। परन्तु मतभेद तो बेशक हैं, जैसा कि मैंने कहा प्रत्येक धर्म की अपनी शिक्षा है। इसमें मतभेद भी होते हैं, परन्तु असल चीज़ है यह देखना कि नीयत क्या है? यदि कहीं इस्लाम ने औरतों के बारे में कई बातें कहें कि यह न करें तो यह इसलिए नहीं कि औरत के सम्मान को कम किया जाए , बल्कि नीय्यत यह थी कि इस से औरत का रुत्बा और सम्मान स्थापित हो। जैसा कि मैंने पहले बताया कि इस से बड़ी बात और क्या होगी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरत के पांव के नीचे जन्नत है, मर्द के पांव के नीचे नहीं। यह स्थान औरत को इसलिए मलिक़ा उसने अपने बच्चों की नगरानी की और क़ौम को बनाया। और नेक औरत ही है जिसकी गोद में पलने वाले लोग फिर क़ानून का भी सम्मान करने वाले होते हैं, उच्च आचरण दिखाने वाले होते हैं, आचरण की सुरक्षा करने वाले होते हैं। उनमें बर्दाश्त का भी माद्दा होता है, और एक दूसरे के धर्म से भी बराबरी का सुलूक करते हैं। तो असल चीज़ यह है कि नीय्यत क्या है। और हमारे निकट यदि नीय्यत नेक है तो बाक़ी शिक्षा तो विभिन्न धर्मों की विभिन्न है, और इसके लिए प्रत्येक का अपना-अपना धर्म है,इस पर चलें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दुनिया में मतभेदों को दूर करने के लिए एक चीज़ यह है कि हम देखें कि हमारे अन्दर साझी चीज़ें क्या हैं, यह न देखें कि हमारे अन्दर अन्तर किया है? क़ुरआन करीम ने हमें बताया कि अहले किताब से भी कह दो, दूसरे धर्म वालों से , यहूदियों से, ईसाइयों से कहो कि आओ हम एक साझी चीज़, जो हमारे अन्दर है, वह देखें। यह न देखें कि हमारी शिक्षा के अंग क्या हैं। यह देखो कि अंदर common चीज़ किया है। और वह common चीज़ ख़ुदा है, जो एक ख़ुदा वाहिद है। हम उसको पूजने वाले हैं , हम उसको मानने वाले हैं और वह सब का रब है। अत: यह साझी चीज़ हर धर्म में पाई जाती है। और जब हम इस बात को समझ लें और एक ख़ुदा की इबादत करने वाले हों। और उसका हक़ अदा करने वाले हों और यह समझने वाले हों कि सब सृष्टि ख़ुदा ने पैदा की है और उसकी सृष्टि है तो फिर धार्मिक मतभेदों या कल्चर के मतभेदों या दूसरे छोटे मतभेदों, हर किस्म के मतभेद ख़त्म हो जाते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मेयर साहिबा ने भी उन्हीं इन्सानी क़दरों की बात की जो मैं पहले भी कह चुका हूँ। अब

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

यह इस शहर या उनके शहर की बात नहीं है, अब तो पूरी दुनिया एक Global Village बन चुकी है। और दुनिया में अमन स्थापित करने के लिए ज़रूरी है कि हमारे अन्दर जहां सहन का माद्दा पैदा हो वहां दूसरे धर्मों के लिए शिष्टाचार और सम्मान का भी माद्दा पैदा हो। और इसी तरह हम हक़ीक़त में एक दूसरे के साथ अमन से और प्यार से और सौहार्द से रह सकते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: प्रान्तीय मेंबर साहिब ने भी आज़ादी के हक़ की बातें कीं। यह सारी बड़ी अच्छी बातें हैं। हम यहां आए, हम ने यहां अपने आपको समाहित किया तो केवल अपनी ज़रूरत के लिए इसलिए नहीं कि हमें ज़रूरत थी। अक्सरीयत जो अहमदियों की यहां कई देशों से आई है उनकी persecution हो रही थी, वहां उन पर अत्याचार हो रहे थे, उनको धार्मिक आज़ादी नहीं थी, उनके बहुत सारे अधिकार छीने जा रहे थे इसलिए वह यहां आए। परन्तु यहां हम integrate हो रहे हैं तो केवल इसलिए नहीं कि यहां आकर हमें यह सुविधाएं मिल गईं, और यदि हमने अपना यह इज़हार न किया तो कहीं सुविधाएं वापस न ले ली जाएं। बेशक यह भी ज़रूरी है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो इन्सानों का शुक्रिया अदा नहीं करता वह ख़ुदा तआला का भी शुक्रिया अदा नहीं करता। अत: इस दृष्टि से यह हमारी धार्मिक ज़िम्मेदारी है कि हम यहां की हुकूमत के , यहां के लोगों के शुक्रगुज़ार हों जिन्होंने हमें यहां रहने की आज्ञा दी, अपने अंदर समाहित करने की आज्ञा दी और इसकी कारण से हमें यहां धार्मिक आज़ादी भी है और दूसरी आज़ादियां भी हैं। परन्तु इसके साथ इस देश के क़ानून की पाबन्दी करना और यहां के लोगों का सम्मान करना हमारे ईमान का भी हिस्सा है और यही आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि देश की मुहब्बत तुम्हारे ईमान का हिस्सा है। अत: जिस देश ने हमें समाहित किया, जिस देश में हम आ गए, वहां की नेशनल्टी मिल गई, इस देश में कई स्थानों हमारी दूसरी और तीसरी नस्ल भी शुरू हो गई, तो अब यह देश जर्मनी जो है, यह उनका देश है और इस से वफ़ादारी करना, जर्मनी के क़ानून की पाबन्दी करना,जर्मनी के हर शहरी के साथ उत्तम व्यवहार करना, आचरण से प्रस्तुत आना,धार्मिक बराबरी दिखाना, बर्दाश्त रखना, यह सब इसलिए ज़रूरी है कि देश में अमन स्थापित रहे। और देश में अमन स्थापित रखना हमारे ईमान का हिस्सा है क्योंकि इसी से देश की आर्थिक तरक़्क़ी होती है और इसी से देश दूसरे से stable होता है। अत: ईमान की मांग है कि अब हम यहां रह कर इस देश की सेवा करें। इस बात को छोड़ते हुए उसके कि कौन किस धर्म का है या क्या क़ानून है, जो भी क़ानून हैं इसकी पाबन्दी करना हमारे लिए ज़रूरी है और हर सच्चे मुसलमान के लिए देश की सेवा करना ज़रूरी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: धर्म की आज़ादी की बात की गई, तो मैं दोबारा यही कहूँगा कि हम धर्म की आज़ादी को स्थापित रखेंगे तो अमन के इज़्हार होते रहेंगे। एक दूसरे के धर्म को छेड़ेंगे तो अमन स्थापित नहीं रह सकता, बेचैनियां पैदा होंगी, और इसके लिए ज़रूरी है कि हम उसके लिए हमेशा कोशिश करते रहीं। और हर व्यक्ति चाहे वह ईसाई है या यहूदी है, मुसलमान है, हिन्दू है, सिख है या किसी भी धर्म का है,वह दूसरे धर्म की इज़्ज़त और सम्मान करे और उनको यह हक़ दे कि वह जिस धर्म को भी अपनाएं, उसका इज़हार भी कर सकें और इसके अनुसार अनुकरण भी कर सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: क़ुरआन करीम ने कहा है कि धर्म दिल का मामला है और इसमें कोई ज़बरदस्ती नहीं। जब ज़बरदस्ती नहीं और दिल का मामला है तो फिर प्रत्येक को हक़ है,कोई यहूदी बनना पसन्द करता है तो यहूदी हो सकता है,या कोई ईसाई बनना पसन्द करता है तो ईसाई हो सकता है। या मुसलमान बनना पसन्द करता है तो मुसलमान हो सकता है। एक तो एक दूसरे के लिए नफ़रतें नहीं होनी चाहिऐं, दूसरे किसी प्रकार की रोक नहीं होनी चाहिए और यही ख़ूबी अभी तक जर्मनी में भी और दूसरे पश्चिमी देशों में भी है कि यहां धार्मिक आज़ादी है। और जब तक यह धार्मिक आज़ादी स्थापित रहेगी,यहां अमन भी स्थापित रहेगा और देश तरक़्क़ी भी करता चला जाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पार्लियामेंट के मेंबर ने भी बातें कीं और कहा कि मस्जिद अमन का निशान है। उन्होंने भी बड़ी उत्तम बात की कि मस्जिद तो अमन का निशान है। और मस्जिद के बनाने से यह इज़हार होता है कि मुसलमान यहां integrate होना चाहते हैं। अवश्य मस्जिद का बनाने जहां हमारे लिए ख़ुशी का कारण है , वहां इस बात का भी इज़हार है कि हम इस देश का हिस्सा हैं और मिल-जुल कर इस देश की तरक़्क़ी का भी हिस्सा बनना चाहते हैं और अपनी धर्म की रिवायतों के अनुसार, अपनी धर्म की शिक्षा के अनुसार इबादत करते हुए इस देश की बेहतरी के लिए जो कुछ भी हो सकता है वे करना चाहते हैं और करेंगे और यही मस्जिदों का महत्त्व है। क्योंकि क़ुरआन करीम ने भी बड़ा स्पष्ट फ़रमाया है कि मस्जिद में आने के बाद यदि तुम लोग यतीमों का ध्यान नहीं रखते, इन्सानी क़दरों का विचार नहीं रखते, दूसरों को दु:ख पहुंचाते हो तो तुम्हारी नमाज़ें, तुम्हारा मस्जिद में आना, यह मस्जिद बनाने करना , यह बेफ़ाइदा है। अत: यह मस्जिद की बनाने हमें इस बात की तरफ़ ध्यान दिलाती है कि हमने इस बनाने के साथ जहां ख़ुदा तआला की इबादत में बढ़ना है वहां एक दूसरे की भावनाओं का भी ध्यान रखना है। चाहे वह किसी धर्म से सम्बन्ध रखने वाला हो या नास्तिक हो, उसकी भावनाओं का विचार रखना है। और धार्मिक मतभेदों को सामने लाने के स्थान पर जो साझी चीज़ें हैं उनको सामने लाना है ताकि हम एक होकर काम कर सकें। और देश और क़ौम की बेहतरी के लिए काम कर सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसके बाद मैं अहमदियों को भी यही कहूँगा कि इस मस्जिद बनने के बाद अब आप लोगों की, जो इस क्षेत्र में रहते हैं, ज़िम्मेदारियाँ बढ़ गई हैं। पहले से बढ़कर इस बात का इज़हार करें कि आप लोग देश और क़ौम के वफ़ादार हैं। आप लोग आचरण का सम्मान करने वाले हैं, उनका इज़हार करने वाले हैं, उनको निभाने वाले हैं और हर अहमदी से पहले से बढ़कर इस बात का भी इज़हार होना चाहिए कि हम अब यहां प्यार और मुहब्बत और सुलह तथा मैत्री की फ़िज़ा स्थापित करेंगे। अल्लाह तआला आप लोगों को सामर्थ्य प्रदान फ़रमाए। आप सब का शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर का ख़िताब 6 बजकर10 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई जिसमें मेहमान अपने-अपने तरीक़ा के अनुसार शामिल हुए। इसके बाद समस्त मेहमानों ने हुज़ूर अनवर के साथ खाना खाया।

इस आयोजन के बाद 7 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैयतुल बसीर (महदी आबाद) में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। आज प्रोग्राम के अनुसार महदी आबाद (Nahe) से ओसना ब्रूक (Osnabrck) के लिए रवानगी थी

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को अल-विदा कहने के लिए जमाअत के लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या महदी आबाद में जमा थी। मर्दों औरतों की एक भीड़ थी। बच्चों और बच्चियों के ग्रुप अल-विदाई नज़्में पढ़ रहे थे। 7 बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और लोगों के बीच कुछ देर के लिए रौनक अफ़रोज़ रहे। प्रत्येक दर्शन के सौभाग्य से लाभान्वित हुआ 8 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और क़ाफ़िला महदी आबाद से ओसना ब्रूक के लिए रवाना हुआ।

महदी आबाद से ओसना ब्रूक की दूरी 262 किलोमीटर है। लगभग अढ़ाई घंटे के सफ़र के बाद रात साढ़े दस बजे मस्जिद बिशारत ओसना ब्रूक पधारे। ओसना ब्रूक जमाअत के लोगों ने अपने प्यारे आक़ा का भरपूर स्वागत किया। मर्दों औरतों और बच्चों और बच्चियों की एक बड़ी संख्या अपने प्यारे आक़ा के स्वागत की लिए आई थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जैसे गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए। सदर जमाअत ओसना ब्रूक मलिक नवीद अहमद साहिब और मुबल्लिग़ सिल्सिला हन्नान सोभी साहिब ने हुज़ूर अनवर को मुबारकबाद कहा और हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ ऊंचा करके सब लोगों को अस्सलामो अलैकुम कहा और अपनी रिहाइश गाह में तशरीफ़ ले गए। हुज़ूर अनवर की रिहाइश मस्जिद बिशारत से जुड़े हुए मिशन हाऊस के रिहायशी हिस्सा में थी।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 26 November 2020 Issue No.48

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 2 का शेष

मुहसिन के एहसान का बदला उतारने की एक छोटी कोशिश होगी।

मुझे हमेशा आश्चर्य होता है कि मुस्लमान इस मसला को विशेष तौर से वर्णन करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसे बेनफ़्स थे कि आप ने अपनी औलाद के लिए सदक़ा को हराम कर दिया। और उन्हें यह ख़्याल नहीं आता कि आप आए से बेनफ़्स थे तो मुस्लमान ऐसे नफ़्स के बंदे हो गए हैं कि आप के एहसान का बदला उतारने की अदना कोशिश भी नहीं करते। मुहसिन किसी बदला का ख़्याल नहीं करता। परन्तु क्या जिस पर उपकार किया जाए उसकी शराफ़ते नफ़्स उसका तक़ाज़ा नहीं करती कि वह मुहसिन के उपकार का शुक्रिया व्यवहार से अदा करे। मेरे निकट इस आदेश से अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ये शिष्टाचार सिखाया था कि अगर हज़रत रसूले अक़रस की औलाद में से कोई ग़रीब हो तो वह उसके साथ हुज़ूर के उपकार की याद में सुलूक करें। क्योंकि आपकी औलाद के साथ सदक़ा का मामला किया ही नहीं जा सकता। क्या अपने भाईयों को लोग सदक़ा दिया करते हैं? फिर क्या इस रुहानी बाप से उनका सुलूक भाईयों जैसा नहीं होना चाहिए? अफ़सोस कि इस हिक्मत के न समझने के कारण से मुस्लमान दो हुक्मों में से एक को तोड़ने लग गए हैं। या तो वे सय्यदों पर सदक़ा और ज़कात ख़र्च करने लग गए हैं या उन की सेवा से बिल्कुल वंचित हो गए हैं।

मुझ पर अल्लाह तआला का एहसान है कि मैंने देर से इस बिन्दु को समझा है और मुझे कई बार इस बात की तौफ़ीक़ मिली है कि ग़रीब सादात की सेवा करूँ। न इस ख़्याल से कि मैं उन पर सदक़ा कर रहा हूँ बल्कि इस ख़्याल से कि उन से उत्तम व्यवहार उस महान उपकार के इक़रार की जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम पर किए हैं एक छोटी कोशिश है। फ़ल्हमदो लिल्लाह अला ज़ालिक। काश मुस्लमान इस बिन्दु को समझें और सादात को सदक़ा देने या उनकी मुश्किलों को बिल्कुल नज़र अंदाज करने के दो घृणित जुर्मों से बच जाएं। अगर वह ऐसा करें तो शायद अल्लाह तआला भी उनकी औलादों पर रहम फ़रमाए।

(तफ़सीर कबीर, भाग 1 पृष्ठ 31 से 32 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

करे। अत: आप लोगों में से जो कोई इस पर आलोचना करना चाहे वह निहायत आज़ादी और शौक़ से कर सकता है।

(भीड़ में से)"केवल एक व्यक्ति बोला और कहा कि यदि किताब का प्रकाशन बंद न हुआ तो फिर हमेशा तक प्रकाशित होती रहेगी

इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया

"यदि हम वास्तव में किताब का प्रकाशन बन्द न करें जो उसके रद्द करने की सूरत में हो सकती है तो गर्वनमेंट से एक-बार नहीं हज़ार बार इस तरह की सहायता लेकर उसका प्रकाशन बन्द किया जाए, वे रुक नहीं सकती। यदि इस थोड़े समय के लिए वह नाम मात्र के लिए बन्द भी हो जाए तो फिर भी बहुत सी कमज़ोर तबीयत के इन्सानों और कई आने वाली नस्लों के लिए ये परामर्श हलाक करने वाला ज़हर होगा। क्योंकि जब उनको यह मालूम होगा कि अमुक़ किताब का उत्तर जब न हो सका तो उसके लिए गर्वनमेंट से बन्द कराने की कोशिश की। इससे एक किस्म की कुधारणा अपने मज़हब के बारे में पैदा होगी। अत: मेरा यह नियम रहा है कि ऐसी किताबों का उत्तर दिया जाए और गर्वनमेंट की एक सच्ची सहायता अर्थात आज़ादी से लाभ उठाया जाए और ऐसा काफ़ी उत्तर दिया जाए कि ख़ुद उनको प्रकाशित करते हुए लज्जा हो। देखो जैसे हमारे मुक़द्दमा डाक्टर क्लार्क में जब उनको मालूम हो गया कि मुक़द्दमा में जान नहीं रही और कृत्रिम जादू का पुतला टूट गया तो उन्होंने आथम की बीवी और दामाद जैसे गवाह भी पेश न किए। अत: मेरी राय यही है और मेरे दिल का फ़तवा यही है कि इस का दांत तोड़ने वाला उत्तर बहुत नर्मी और प्रेम से दिया जाए। फिर ख़ुदा चाहेगा तो उनको ख़ुद ही साहस न होगा।"

मई 1898 ई

ईद के दिन, स्थान कादियान दरख़्त बड़ के वृक्ष के नीचे, पूर्वी दिशा, नमाज़ ईद के बाद जलसा ताऊन के आयोजन में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने निम्नलिखित तक़रीर फ़रमाई।

दुनिया नश्वर है।

आप सब दोस्तों को मालूम है कि प्रताप वाले अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हदीस में भी फ़रमाया है कि एक ज़माना ऐसा गुज़रा है कि इन्सान, हैवान, चौपाए, परिन्दे, ज़मीन, आसमान और जो कुछ ज़मीन आसमान में है किसी चीज़ का नाम तथा निशान न था। केवल ख़ुदा ही था। यही इस्लाम का अक़ीदा है। وَلَمْ يَكُنْ مَعَهُ شَيْءٌ अर्थात ख़ुदा के साथ और कोई वस्तु न थी। हमको उसने क़ुरआन और हदीस के माध्यम से ख़बर दी है कि एक ज़माना और भी आने वाला है जबकि ख़ुदा के साथ कोई न होगा। वह ज़माना बड़ा भयावह ज़माना है। चूँकि इस पर ईमान लाना हर मोमिन और मुसलमान का काम है जो इस पर ईमान नहीं लाता। वह मुसलमान नहीं काफ़िर है। और बेईमान है जिस तरह से स्वर्ग, नर्क, अंबिया अलैहिमुस्सालम और किताबों पर ईमान लाने का हुक्म है वैसा ही इस क्षण पर ईमान लाना अनिवार्य है। जब बिगुल फूंक कर सब समाप्त हो जाऐंगे। यह अल्लाह तआला की सुन्नत और अल्लाह तआला की आदत है

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 195 से 196 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad